ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार,1 सितम्बर 2013 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार 1 सितम्बर, 2013 से 7 सितम्बर 2013

भा. कृ.–12 ● वि० सं०–2070 ● वर्ष 78, अंक 71, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 190 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,114 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

आर्य समाज विक्रमपुरा जालन्धर में डी.ए.वी. कॉलेज का सक्रिय योगदान

डी.ए.वी. कॉलेज, जालन्धर के शिक्षार्थी, शिक्षक, गैर शिक्षक कर्मचारी तथा अभिभावक सदा ही आर्य समाज, विक्रमपुरा, जालन्धर के रविवासरीय साप्ताहिक सत्संगों में सम्मिलित होकर इस की की गतिविधियों में अपना उल्लेखनीय योगदान देते रहे हैं। वर्ष 2013 के साप्ताहिक कार्यक्रम के अन्तर्गत डी.ए.वी. महाविद्यलय के प्राचार्य डॉ. बी. बी. शर्मा हवन–यज्ञ में मुख्य यजमान बने। सत्संग प्रेमी आर्यजनों को सम्बोधित करते हुए डॉ. बी. बी. शर्मा ने 'प्रार्थना' एवं 'कर्म' के महत्व पर प्रकाश डालते हुए सभी आर्य बन्धुओं को 'श्रेष्ठ कर्म' में रत रहने के लिए प्रेरित किया तथा युवा वर्ग को सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन के लिए संघर्षरत रहकर जागरूक रहने की प्रेरणा दी। तथा युवा वर्ग को आर्य वीरों का अनुसरण करने के प्रति उत्साहित किया महाविद्यालय के छात्र छात्राओं ने मन्त्र उच्चारण एवं भजन प्रस्तुत कर सभी को आनन्द–विभोर कर दिया। प्रो. जगरूप सिंह (प्रिंसीपल मेहर चन्द पॉलीटेक्नीक कॉलेज) द्वारा लिखित महर्षि दयानन्द जी की जीवनी जो कि गरुमुखी लिपि में प्रस्तुत की गई का इस अवसर विमोचन किया गया। डी.ए.वी. संस्थाओं से पधारे मुख्य अध्ष्ठिाताओं ने उनके इस प्रयास की सराहना की।

उपस्थित आर्य बन्धुओं ने इस परम्परागत पद्धति से सम्पन्न हवन–यज्ञ एवं सत्संग कार्यक्रम की प्रशंसा की।

स्वतन्त्रता दिवस पर डी.ए.वी. रोहतक ने किया रैलियों का आयोजन

डी.ए.वी. विद्यालय की पाँचवीं कक्षा के विद्यार्थियों द्वारा प्रधानाचार्या श्रीमती सुनीता जुनेजा के मार्गदर्शन में 'ग्रीन वॉक और टॉक' रैली निकाली गई। इस रैली में विद्यालय की तीनों शाखाओं कमला नगर, डी.एल.एफ. तथा मेन कैम्पस के लगभग 450 विद्यार्थियों ने भाग लिया। विद्यार्थियों ने क्षेत्र के निवासियों को वृक्षारोपण हेतु जागृत किया। इस रैली का मुख्य उद्देश्य जन साधारण को वृक्षारोपण करने व वृक्षों की सुरक्षा के प्रति सचेत करना था। लघु नाटिकाओं के माध्यम से यह दर्शाने का प्रयास किया गया कि पेड़ हमारे लिए बहुत लाभदायक हैं यह वातावरण को प्रदूषित होने से बचाते हैं। इनके बिना हमारा स्वस्थ रहना असम्भव है।

छोटे–छोटे सन्देश जैसे ' तरक्की के सपने अधूरे–प्रकृति की रक्षा से होंगे पूरे' 'जन जन से ये कहना है वृक्ष धरा का गहना है' पेड़ लगाओ देश बचाओ–इस धरा को स्वर्ग बनाओ' 'पेड़ों को मत काटो भाई–ये करते हैं प्रकृति की भरपाई' इत्यादि के माध्यम से विद्यार्थियों ने जनसाधारण को पेड़ लगाने व पेड़ो की रक्षा करने के लिए प्रेरित किया।

प्रधानाचार्या श्रीमती सुनीता जुनेजा ने विद्यार्थियों तथा उपस्थित जनसमुदाय को जीवन में अधिक से अधिक वृक्षारोपण व पेड़ों की सुरक्षा करने हेतु प्रेरित किया।

सी एफ डी.ए.वी गड़ेपान में हुआ वृक्षारोपण

सी एफ डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल गड़ेपान में वृक्षारोपण कार्यक्रम मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि चम्बल फर्टिलाइज़र के अध्यक्ष श्रीमान विनोद मेहरा के कर कमलों द्वारा विद्यालय एवं इसके आस पास के परिसर में 200 पौधों को रोपित किया गया जिनके संरक्षण की जिम्मेदारी विद्यालय के बालक–बालिकाओं ने उठाई। इस कार्यक्रम में बालकों ने लोकनृत्य, नृत्यनाटिका आदि विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के माध्यम से वर्तमान समय में वृक्षों की कटाई से वातावरण पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों की ओर दर्शकों का ध्यान आकर्षित किया और संदेश दिया कि यदि हम आज भी नहीं संभले तो मानव जीवन के अस्तित्व के लिए संकट की स्थिति पैदा हो जाएगी। चम्बल फर्टिलाइज़र के उपाध्यक्ष श्रीमान ए. के. भार्गव अन्य पदाधिकारी तथा उत्तम महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती रीटा मेहरा एवं समिति के अन्य सदस्य भी इस अवसर पर उपस्थित थे। विद्यालय की प्रधानार्या श्रीमती अंजू उतरेजा ने बालकों को संबोधित करते हुए पर्यावरण संरक्षण के महत्व को समझाया एवं अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन किया।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – श्री पूनम सूरी

www.thearyasamaj.org

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार 1 सितम्बर, 2013 से 7 सितम्बर, 2013

दोनों हाथों से भर-भरकर दे

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

दिवो विष्ण उत वा पृथिव्याः, महो विष्ण उरोरन्तरिक्षात्।
हस्तौ पृणस्व बहुभिर्वसव्यैः, आप्रयच्छ दाक्षिणादोत सव्यात्।।

अथर्व 7.26.8

ऋषिः **मेधातिथिः**। देवता **विष्णुः**। छन्दः **त्रिष्टुप्।**

● **(विष्णो)** हे सव्रव्यापक परमात्मन्! **(दिव)** द्युलोक से **(उत वा)** और **(पृथिव्याः)** पृथिवी-लोक से [तथा] **(विष्णो)** हे विश्वान्तयामिन्! यज्ञ के देव! **(महः)** महनीय **(उरोः)** विस्तीर्ण **(अन्तरिक्षात्)** अन्तरिक्ष-लोक से **(बहुभिः)**वहुत- से **(वसव्यैः)** ऐश्वर्य-समूहों से **(हस्तौ)** दोनों को **(पृणस्व)** भर ले। **(दक्षिणात्)** दाहिने हाथ से **(आ प्रयच्छ)** दान दे **(उत)** और **(सव्यात्)** बाएँ से [भी] (आ [प्रयच्छ]) दान दे।

● हे विष्णु! हे सर्वव्यापक! हे विश्वान्तर्यामिन्! हे विश्व-ब्रह्माण्ड के स्वामिन! तुम अपूर्व धनाधीश हो। विश्व के द्युलोक, अन्तरिक्ष-लोक और पृथिवी-लोक में जो धन बिखरा पड़ा है, वह सब तुम्हारा ही है। अतः तुम धन-कुबेर हो। एक और तुम धनपति हो ओर हम अकिंचन हैं। अतः हम चाहते हैं कि तुम अपने कोष में से दाहिने-बाएँ दोनों हाथों से भर-भरकर हमें दान दो। तुम्हारे रचे द्यु-लोक में प्रकाश का अनुपम पारावार भरा पड़ा है। वह प्रकाश तुम हमें भी प्रदान करो। तुम्हारे रचे विशाल अन्तरिक्ष-लोक में वायु और पर्जन्य का सागर उमड़ रहा है। उसमें से हमें भी प्राण-वायु और अमृतमय वृष्टि-जल प्रदान करो। तुम्हारे रचे पृथिवी-लोक से सुवण, रजत, ताम्र अयस, हीरे, मोती आदि ऐश्वर्यों की निधियाँ भरी हुई हैं। वे ऐश्वर्य तुम हमें भी प्रदान करो। अल्प मात्रा में नहीं, प्रचुर मात्रा में प्रदान करो, क्योंकि हम ऐश्वर्यमय जीवन जीने की ही साध लिये हुए हैं।

पर हे विश्वव्यापी देव! हम केवल इन भौतिक ऐश्वर्यों का ही पाकर सन्तुष्ट नहीं हो जाना चाहते। हम शरीरस्थ द्यु-लोक, अन्तरिक्ष-लोक और पृथिवी-लोक के ऐश्वर्यों को भी पाने के लिए आतुर हो रहे हैं। हमारा अन्नमय कोश ही पृथिवी-लोक है, जिसमें शरीर की त्वचा से लेकर अस्थि-पर्यन्त सब ढांचा आ जाती है। असका ऐश्वर्य है शारीरिक स्वास्थ्य और शारीरिक बल, जिसके बिना मनुष्य का जीवन-यापन,व्यान,उदान, समा, इन पांचों से तथा कर्मेन्द्रियों से मिलकर प्राणमय कोश बनता है। इसका ऐश्वर्य है प्रागण, अपानन आदि क्रियाओं का समुचित रूप से होते रहना तथा हस्त-पादादि कर्मेन्द्रियों को कार्य-क्षम बने रहना। मन और ज्ञानेन्द्रियों से मिलकर मनोमय कोश बनता है। इसका ऐश्वर्य है मन के माध्यम से ज्ञानेन्द्रियों का ज्ञान-प्राप्ति में सहायता होना तथा मन का सत्यसंकल्प करना। ज्ञानेन्द्रियों-सहित बुद्धि विज्ञानमयकोश कहलाता है। इसका ऐश्वर्य है ज्ञानेन्द्रियों से प्राप्त ज्ञान पर ऊहापोह करके निश्चयात्मक ज्ञान अर्जित करना। आनन्दमय कोश द्यु-लोक है, जहाँ हृदयपुरी में प्रतिष्ठित आत्मा के अन्दर ब्रह्म का वास है। इसका ऐश्वर्य है ब्रह्मानन्द की प्राप्ति। हे विष्णुदेव! तुम इन समस्त ऐश्वर्यों से भी भरपूर करने की कृपा करते रहो।

हे जगत्पिता! तुम निरैश्वर्य की अवस्था से पार करके हमें अधिकाधिक ऐश्वर्य प्रदान कर कृतार्थ करते रहो।

❑

वेद मंजरी स

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

घोर घने जंगल में

● महात्मा आनन्द स्वामी

उपनिषद् की एक कथा सुनाकर स्वामी जी ने बताया कि जीवन में न तो कोरे मायावाद से लाभ और होगा न ही कोरे अध्यात्मवाद से। जीवन में ठीक मार्ग यह होगा कि मायावाद और अध्यात्मवाद को मिलाकर चलें। न केवल मिलाकर अपितु ठीक से मिलाकर।

अविद्या/असंभूति-मायावाद और विद्या/संभूति अध्यात्मवाद शब्दों की यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय पर आधारित मायावाद और अध्यात्म के मेल की बात स्वामी जी ने बतायी और इतिहास का सन्दर्भ प्रस्तुत कर बुद्ध और शंकर की तुलना में क्रान्तदर्शी स्वामी दयानन्द का मत प्रस्तुत किया कि संसार में प्रकृति और ईश्वर के अतिरिक्त जीवात्मा भी है। वही कल्याण की इच्छा से आगे बढ़ता है। उसका कल्याण तब है जब मायावाद-अध्यात्मवाद यानि प्रकृति-परमेश्वर अन्न-प्राण, अविद्या-विद्या को सम्मुख रख कर आगे बढ़े।

आज मनुष्य केवल मायावाद के पीछे भाग रहा है। विज्ञान ने अनेक अविष्कार किये हैं। लेकिन सृष्टि की लम्बी आयु में कई युगों में ऐसा हो चुका है। स्वामी जी वेदाधारित वायुयान के विभिन्न प्रकारों का उल्लेख करके अपनी बात पुष्ट की। रूस के राष्ट्रपतियों के भाषणों में 'ईश्वर ने चाहा' 'ईश्वर ही जानता है कि क्या होगा' जैसे अंश यह भी सिद्ध करते हैं कि अस्तिकता का नितान्त अभाव वहां भी नहीं हुआ।

स्वामी जी ने अध्यात्मवाद और मायावाद क्या हैं, यह भी बताया

अब आगे....

आर्यसमाज कहता है, वेद कहता है, उपनिषद् के ऋषि कहते हैं कि दोनों ही मार्ग ठीक नहीं। ठीक मार्ग यही है कि मायावाद और अध्यात्मवाद दोनों को मिलाकर बढ़िये।

अभी पिछले दिनों हमारे उपराष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन जी ने भी कहा, "संसार का कल्याण मायावाद और अध्यात्मवाद दोनों को मिलाकर आगे बढ़ने में है।"

ये मायावाद और अध्यात्मवाद संसार में ही नहीं, हमारे शरीर में भी हैं। दो शक्तियाँ हैं इसके अन्दर। एक को विचारशक्ति (Sensery nerves) और दूसरी को कर्मशक्ति (Motor nerves) कहते हैं। उपनिषद् की भाषा में इन्हें ब्रह्म और क्षात्र शक्ति कहते हैं- गीता की भाषा में कृष्ण-शक्ति और अर्जुन-शक्ति।

गीता में श्री कृष्ण महाराज ने कमाल किया। कर्मयोग, ज्ञानयोग, शक्तियोग, सांख्ययोग, ध्यानयोग सबका वर्णन कर दिया। बताया कि परमात्मा क्या है? बताया कि आत्मा कभी मरता नहीं, कभी बूढा नहीं होता। यह शरीर इसके लिए कपड़े की भाँति है। मनुष्य जिस प्रकार पुराने वस्त्र को छोड़ देता है, आत्मा इसी प्रकार शरीर को छोड़ देता है। मनुष्य जिस प्रकार एक वस्त्र उतारकर दूसरा पहन लेता है, उसी प्रकार आत्मा एक शरीर को छोड़कर दूसरे को धारण कर लेता है। आत्मा को अग्नि नहीं जलाती, पानी नहीं डुबाता, हवा नहीं सुखाती। फिर यह भी बताया कि सच्चा आनन्द प्रभु दर्शन में है और प्रभु-दर्शन मन को वश में करने से होता है। अर्जुन ने कहा, "मन तो बहुत चंचल है।" कृष्ण ने उत्तर दिया, "चंचल है अवश्य, परन्तु अभ्यास और वैराग्य से वश में हो जाता है।" इतना ज्ञान, इतनी बड़ी-बड़ी बातें कहने के पश्चात् भी गीता लिखनेवाले का मन नहीं भरा तो उसने गीता के अन्तिम श्लोक में कहा-

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।

'जहाँ योगेश्वर श्री कृष्ण हैं और जहाँ धनुर्धारी अर्जुन है, जहाँ वे दोनों मिलकर काम करते हैं, वहाँ शोभा, विजय और सम्पत्ति निश्चित है, यह है मेरी सम्मति।'

और ये योगेश्वर कृष्ण क्या हैं? अध्यात्मवाद। धनुर्धारी अर्जुन क्या है? मायावाद। दोनों मिलकर चलें तो प्रत्येक प्रकार की सफलता मिलती है अवश्य। जहाँ ब्रह्मशक्ति और क्षात्रशक्ति दोनो मिलकर चलती हैं, उस देश का कल्याण होता है-

यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरतः सह।

'ब्रह्मशक्ति और क्षात्रशक्ति बुद्धिबल और बाहुबल, ये दोनों जहाँ मिलकर चलते हैं, वहाँ कल्याण होता है।' ये

दोनों वस्तुएँ विद्यमान हों तभी शरीर चलता है, यह जीवन भी सफल होता है। बुद्धिबल और बाहुबल, ब्रह्मशक्ति और क्षात्रशक्ति, कृष्ण और अर्जुन, अध्यात्मवाद और मायावाद– दोनों मिलें, उचित रूप में मिलें, तभी यह शरीर और उसका जीवन ठीक रूप से चलता है।

एक व्यक्ति है; देखने में बहुत सुन्दर, सुडौल, अच्छा पहलवान है परन्तु बुद्धि बिगड़ गई, पागल हो गया, पशुओं की भाँति रहता है। तब होता क्या है? गाँव के बच्चे उसे 'पागल है, पागल है' कहकर पत्थर मार–मारकर गाँव से बाहर निकाल देते हैं। उसकी यह दुर्गति क्यों हुई? इसलिए कि उसमें ब्रह्मशक्ति नहीं। अर्जुन है परन्तु कृष्ण नहीं।

इसी प्रकार एक दूसरा व्यक्ति है। बहुत तीव्र बुद्धि है उसकी। एम.ए. है, शास्त्री है, ए.ओ.एल. है, डी. लिट् भी है, और भी कई डिग्रियाँ उसने प्राप्त की हैं, शास्त्र पढ़ा है, वेद और उपनिषद् पढ़े हैं, धर्म और नीति का पण्डित है परन्तु शरीर हो गया है निकम्मा। फेफड़े में तपेदिक हो गया है। कीड़े उसका सारा रक्त चूस गये हैं। हड्डियों को खाये जाते हैं; या उसे अधरंग हो गया है। देखता सब–कुछ है, समझता सब–कुछ है, परन्तु शरीर में हिलने की शक्ति नहीं, जिह्वा में बोलने की शक्ति नहीं। उसके घर डाकू आते हैं, वस्त्र निकालते हैं। वह कुछ कर नहीं पाता। डाकू उसकी पत्नी का अपमान करने के लिए उसके बाल खींचते हैं, उसके कपड़े फाड़ देते हैं, उसे तमाचे मार–मारकर बेहोश किये देते हैं। वह सब–कुछ देखता है परन्तु कुछ कर नहीं सकता। अब बताओ, उसकी बुद्धि का क्या लाभ हुआ? उसमें कृष्ण है, अर्जुन नहीं। उदसकी Sensery nerves काम करती हैं, Motor nerves नहीं। पहले व्यक्ति की Sensery नाड़ियाँ बेकार थीं, इस व्यक्ति की मोटर नाड़ियाँ। दोनों में से एक भी खराब हो तो काम चलता नहीं। दोनों विद्यमान रहें तभी शरीर चलता है, जीवन चलता है, समाज चलता है, राष्ट्र चलता है, संसार चलता है।

केवल अध्यात्मवाद से संसार नहीं चलता, केवल मायावाद से भी नहीं। दोनों के मिलने से चलता है। यह है बृहदारण्यक उपनिषद् के पाँचवें अध्याय के बारहवें ब्राह्मण का सन्देश, जिसे ऋषि ने अन्न और प्राण का उदाहरण देकर हमारे समक्ष रखा।

इस ब्राह्मण पर अभी बहुत–कुछ कहा जा सकता है। इन थोड़े शब्दों की व्याख्या करते हुए विशाल ग्रन्थ भी लिखा जा सकता है, परन्तु इसको छोड़िये। समय है थोड़ा, कार्य बहुत। इसलिए आगे बढ़िये।

अन्धविश्वास पर आधारित तांत्रिक अनुष्ठानों पर लगाया जाए प्रतिबन्ध

डॉ. नरेन्द्र दभोलकर अध्यक्ष अन्धश्रद्धा निर्मूलन समिति की 20 अगस्त को पूने में जघन्य हत्या निन्दनीय तो है ही साथ ही इक्कीसवीं सदी के भारतीय समाज पर एक बदनुमा दाग भी। विज्ञान एवं तकनीक युग के प्रजातान्त्रिक ढांचे की प्रगतिशील विकासशील व्यवस्था में अन्धविश्वास और जहालत की यह पराकाष्ठा कि मानव जीवन मूल्य आधारित सच्चाई का सरेआम गला घोंटा जाए शर्मनाक और चिन्तनीय भी है।

तान्त्रिक धार्मिक अनुष्ठानों के नाम पर नित होने वाले अमानवीय घोर अपराध और अनपढ़, भोले गरीब लोगों का आर्थिक और यौन शोषण कानूनन फौरन बन्द होना चाहिए। प्रिंट और इलेक्ट्रानिक मीडिया में इस के प्रचार प्रसार पर तुरन्त पाबन्दी लगाकर बच्चों, महिलाओं और युवाओं को दिगभ्रमित होने से बचाया जाना चाहिए। सरकार और प्रबुद्ध विवेकशील समाज दोनों का ही इस परिपेक्ष्य में जागना आवश्यक है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण, स्वस्थ नैतिक और सांस्कृतिक जीवन मूल्यों वाली भावी पीढ़ी ही एक उज्ज्वल राष्ट्रीय भविष्य की गारन्टी है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सामाजिक अन्धविश्वासों, रूढ़ियों एवं कुरीतियों का विरोध किया और उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज भी ऐसा ही करता आया है। सत्य आधारित नैतिक जीवन मूल्यों के संरक्षक एवं ध्वजवाहक डॉ. नरेन्द्र दभोलकर की शहादत को नमन करते हुए हम सरकार से अपराधियों को सख्त सजा देने की मांग करते हैं और साथ ही यह भी कि शीघ्र कानून बनाकर अन्धविश्वास आधारित कालाजादू, तांत्रिक अनुष्ठानों एवं अप्राकृतिक कार्यों पर प्रतिबन्ध लगाया जाए।

सत्यपाल आर्य
सह मंत्री
आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

और फिर हवा भी बहुत तीव्र और ठंडी है। सर्दी बढ़ती जाती है। आपमें से कई सज्जनों को जाना है बहुत दूर। मैं। जल्दी–जल्दी समाप्त करूँगा ताकि आप घर में पहुँचें, रजाई लेकर सो जायें। मैं जानता हूँ कि बहुत–से लोग बाहर खड़े हैं। उन्हें कष्ट हो रहा है। यह हॉल ही छोटा है, अब क्या करें?

देखो, मेरी एक बात सुनो! हमारे ऋषियों ने अपने समय में घोर तप किया। इस तप से ऐसी सम्पत्ति प्राप्त की जिससे बड़ी सम्पत्ति आज भी संसार के पास है नहीं। संसार के किसी भी दूसरे देश की सम्पत्ति इस नित्य सम्पत्ति की तुलना नहीं कर सकती। दुःख यह है कि हम इस सम्पत्ति को देखते नहीं। कोश हमारे सामने है और हम आँखें बन्द किये बैठे हैं–

भीखा भूखा कोई नहीं, सबकी गठड़ी लाल।
गृह खोल नहीं देखते, तिस विधि भये कंगाल।।

अरे ओ अपने–आपको कंगाल कहनेवालो! अपनी इस अमिट निधि को तो देखो। अरे, इस गठड़ी को खोलकर तो इसमें झाँको और देखो कि कैसे लाल और जवाहर, पन्ने और मोती, पुखराज और नीलम इसमें भरे पड़े हैं! ऐसी कितनी ही गठड़ियाँ हमारे ऋषि छोड़ गये हैं। प्रत्येक गठड़ी में इतनी सम्पत्ति है कि संसार का बड़े–से–बड़ा कोश उसके समक्ष तुच्छ है।

परन्तु हम तो इनकी ओर देखते ही नहीं। पड़ी थीं ये गठड़ियाँ। हम 'हाय निर्धनता, हाय भूख' चिल्ला रहे थे। तभी एक तपस्वी महापुरुष आये। उन्होंने सभी गठड़ियों को खोलकर देश और मानवता की इस महान् सम्पत्ति को देखा। प्रत्येक गठड़ी से उत्तम–उत्तम रत्न निकालकर एक नई गठड़ी बना दी ताकि इस महान् सम्पत्ति के अन्वेषकों को कष्ट न हो; बहुत अधिक गठड़ियाँ उन्हें खोलनी न पड़े, एक ही गठड़ी खोलकर अपनी महान् सम्पत्ति को देख लें।

इस गठड़ी का नाम है 'सत्यार्थप्रकाश'। उस तपस्वी महापुरुष का नाम था महर्षि दयानन्द जी सरस्वती। उनके दो बड़े ग्रन्थ हैं– एक सत्यार्थप्रकाश, दूसरा ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका। दोनों को पढ़ लीजिये तो इतना ज्ञान मिल जायेगा कि उसके पश्चात् किसी ज्ञान की आवश्यकता रहेगी नहीं। मानवता के लिए इतनी सम्पत्ति मिल जायेगी कि उसके पश्चात् किसी सम्पत्ति की आवश्यकता रहेगी नहीं।

परन्तु, हमारा दुर्भाग्य कि हम ऋषि की बाँधी एक गठड़ी को भी देखना नहीं चाहते। सम्पत्ति का कोश हमारे पास है और हम कंगाल बने बैठे हैं।

ऐसे ही कोश हैं ये उपनिषद् जिनमें से एक उपनिषद् के एक अध्याय की बात मैं आपको सुना रहा हूँ। इस अध्याय के बारहवें ब्राह्मण की बात आपने सुन ली। अब अगले ब्राह्मण की बात सुनिये और यह ब्राह्मण कहता है यह कि "अब तक जो हमने किया वह तुम्हारे लिए किया।" परन्तु यह 'तुम' कौन है?

उपनिषद् का ऋषि कहता है तुम, जो मनुष्य हो, तुम्हारे लिए ये सब बातें हैं। तुम्हारे लिए ये शक्तियाँ हैं। यदि तुम मनुष्य हो, यदि तुमने इन बातों को जान लिया, प्राण और अन्न की शक्ति को देख लिया, ब्रह्मशक्ति और क्षात्रशक्ति के रहस्य को समझकर दोनों को मिला लिया तो फिर तुम्हारे लिए कहीं भी पराजय नहीं, कोई भी ऐसी वस्तु नहीं जो तुम्हें प्राप्त न हो सके।

परन्तु जैसा मैंने पहले भी कहा, मनुष्य का चोला धारण कर लेना आसान है; मनुष्य बनना बहुत कठिन। मनुष्य के

शेष पृष्ठ 4 पर ☞

www.thearyasamaj.org

गायत्री मंत्र का व्याख्यान और भावार्थ

● **स्वामी ध्रुव परिव्राजक**

ओं भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रयोदयात्–।

(यजु. अ. 26/मं. 3)

ओ३म्) यह परमेश्वर का मुख्य या सब नामों से उत्तम नाम है। जैसा पिता पुत्र का प्रेम सम्बन्ध है, वैसे ही ओंकार के साथ परमात्मा का सम्बन्ध है। इस एक नाम से ईश्वर के सब नामों का बोध होता है या इस नाम के साथ अन्य सब नाम लग जाते हैं। जैसे आकार से विराट्, अग्नि आदि, उकार से हिरण्यगर्भ, वायु आदि मकार से ईश्वर, आदित्यादि। (**भूः**) जो सब जगत् के जीवन का आधार, प्राण से भी प्रिय और स्वयम्भू है (**भुवः**) जो सब दुःखों से रहित तथा मुक्ति की इच्छा करने वालों, मुक्तों और अपने सेवक धर्मात्माओं को सब दुःखों से अलग करके सर्वदा सुख में रखता है (**स्वः**) जो स्वयं सुखस्वरूप और अपने उपासकों को सब सुखों की प्राप्ति कराने वाला है, जो नानाविध जगत् में व्यापक होके सब का धारण करता है, नियम में रखता है और सबके ठहरने का स्थान है।

उस (**सवितुः**) सब जगत् की उत्पत्ति करने वाले सूर्यादि प्रकाशकों के भी प्रकाशक सम्पूर्ण ऐश्वर्य से युक्त स्वामी व समग्र ऐश्वर्य के दाता (**देवस्य**) सबके चाहने योग्य, शुद्ध स्वरूप, सर्वत्र विजय कराने वाले परमात्मा को जो (**वरेण्यम्**) अतिश्रेष्ठ या अत्युत्तम ग्रहण या स्वीकार करने योग्य, प्राप्त होने योग्य, और ध्यान करने योग्य (**भर्गः**) सब क्लेशों, दुःखों, दोषों या दुःखमूलक पापों को भस्म करने वाला व पवित्र करने वाला शुद्ध विज्ञानस्वरूप या चेतन ब्रह्मस्वरूप है (**तत्**) उस इन्द्रियों से न ग्रहण करने योग्य परोक्ष को हम लोग (**धीमहि**) धारण करें व उसका ध्यान करें किस प्रयोजन के लिए कि (**यः**) जो सविता देव परमात्मा हमारी (**धियः**) बुद्धियों को (**प्रचोदयात्**) उत्तम गुण, कर्म, स्वभावों में प्रेरणा करे अर्थात् बुरे कामों से छुड़ाकर अच्छे–अच्छे कामों में सदा प्रवृत्त करें। (संस्कार विधि+वेदभाष्य+पंचमहायज्ञविधि+ सत्यार्थ प्रकाश)

इसी प्रयोजन के लिये इस जगदीश्वर की स्तुति प्रार्थना उपासना करना और इससे भिन्न किसी को उपास्य इष्टदेव उसके तुल्य वा उससे अधिक नहीं मानना चाहिये। (संस्कार विधि वेदारम्भ)

इसलिए सब लोगों को चाहिये कि सच्चिदानन्दस्वरूप,नित्यज्ञानी,नित्यमुक्त, अजन्मा, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, व्यापक, कृपालु, सब जगत् के जनक और धारण करने हारे परमेश्वर ही की सदा उपासना करें कि जिससे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जो मनुष्य देहरूप वृक्ष के चार फल हैं, वे उसकी भक्ति और कृपा से सर्वथा मनुष्यों को प्राप्त हों। (पंचमहायज्ञविधिः)

हे मनुष्यों! जो सब समर्थों में समर्थ, सच्चिदानन्दा नन्तस्वरूप, नित्य शुद्ध, नित्य बुद्ध, नित्य मुक्त स्वभाववाला, कृपासागर, ठीक–ठीक न्याय करने हारा, जन्ममरणादि क्लेशरहित, आकाररहित, सबके घट–घट का जानने वाला, सब का धर्त्ता, पिता, उत्पादक, अन्नादि से विश्व का पोषण करने हारा, सकलऐश्वर्य जगत् का निर्माता, शुद्धस्वरूप और जो प्राप्ति की कामना करने योग्य है, उस परमात्मा को जो शुद्ध चेतनस्वरूप है, उसी को हम धारण करें। इस प्रयोजन के लिए कि वह हमारे आत्मा और बुद्धियों का अन्तर्यामी स्वरूप हमको दुष्टाचार अधर्मयुक्त मार्ग से हटाके श्रेष्ठाचार सत्यमार्ग में चलावे, उसको छोड़कर दूसरे किसी वस्तु का ध्यान हम लोग नहीं करें। क्योंकि न कोई उसके तुल्य और न अधिक है, वही हमारा पिता, राजा, न्यायाधीश और सब सुखों का देने हारा है। (सत्यार्थ प्रकाश तृतीय समुल्लास)

भावार्थ – 1.

जो मनुष्य कर्म, उपासना और ज्ञान सम्बन्धिनी विद्याओं का सम्यक् ग्रहण कर सम्पूर्ण ऐश्वर्य से युक्त परमात्मा के साथ अपने आत्मा को युक्त करते हैं तथा अधर्म, अनैश्वर्य व दुःखस्वरूप मलों को छुड़ा के धर्म, ऐश्वर्य और सुखों को प्राप्त होते हैं उनको अन्तर्यामी जगदीश्वर आप ही धर्म के अनुष्ठान और अधर्म का त्याग कराने को सदैव चाहता है। (ऋ.दया.कृत. यजुर्वेदभाष्य. अ.36/मं.3)

भावार्थ – 2.

सब मनुष्यों को चाहिए कि सच्चिदानन्दस्वरूप नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्तस्वभाव सब के अर्न्तयामी परमात्मा को छोड़ के उसकी जगह में अन्य किसी पदार्थ की उपासना का स्थापन कभी न करें, किस प्रयोजन के लिए कि जो हम लोगों से उपासना किया हुआ परमात्मा हमारी बुद्धियों को अधर्म के आचरण से छुड़ा के धर्म के आचरण में प्रवृत्त करें। जिससे शुद्ध हुए हम लोग उस परमात्मा को प्राप्त होकर इस लोक और परलोक के सुखों को भोगें इस प्रयोजन के लिये। (ऋ.दया.कृत. यजुर्वेदभाष्य. अ.22/मं.9)

भावार्थ – 3.

इस मन्त्र में वाचक लुप्तोपमालंकार है। जैसे परमेश्वर जीवों को अशुभाचरण से अलग कर शुभ आचरण में प्रवृत्त करता है वैसे राजा भी करे। जैसे परमेश्वर में पितृभाव करते अर्थात् उसको पिता मानते हैं वैसे राजा को भी मानें जैसे परमेश्वर जीवों में पुत्र भाव का आचरण करता है वैसे राजा भी प्रजाओं में पुत्रवत् वरते। जैसे परमेश्वर सब दोष, क्लेश और अन्यायों से निवृत्त है वैसे राजा भी होवे। (ऋ.दया. कृत. यजुर्वेदभाष्य. अ.30/मं.2)

भावार्थ – 4.

मनुष्य सकल जगत् के उत्पत्तिकर्त्ता, सबसे उत्तम, सब दोषों को नष्ट करने वाले, शुद्ध स्वरूप परमेश्वर की उपासना नित्य करें। किस प्रयोजन के लिये? इसके उत्तर में वेद कहता है – स्तुति, धारणा, प्रार्थना और उपासना किया हुआ परमेश्वर हमें सब दुष्ट गुण, कर्म, स्वभावों से पृथक्, करके सब श्रेष्ठ गुण, कर्म, स्वभावों में सदा प्रवृत्त रखे, इसलिये परमेश्वर की स्तुति आदि करना योग्य है। प्रार्थना का यही मुख्य सिद्धांत है कि जैसी प्रार्थना करें वैसा ही कर्म (आचरण) भी करें। (ऋ.दया. कृत. यजुर्वेदभाष्य. अ.3/मं.35)

दर्शन योग महाविद्यालय
आर्यवन, रोजड़, पत्रा.–सागपुर,
जि.– साबरकांठा (गुजरात) 383307

☞ *पृष्ठ 3 का शेष*

घोर घने जंगल में

रूप में आकर मनुष्यता के महत्त्व को समझना और उसे प्राप्त करना भी कठिन है। प्रायः होता क्या है? मनुष्य के रूप में आकर भी मनुष्य मायावाद के चक्र में पड़ जाता है। परन्तु इसमें सुख, आनन्द और शान्ति नहीं। ऐसा पानी है यह जिसे जितना ही पियो उतनी ही प्यास बढ़ती है। कोरा मायावाद ऐसा विष है जिसमें जीवन का नाम नहीं–

दुनिया का है मजा 'जफ़र' अञ्जामकार ज़हर।
मीठा समझके लोग इसे ललचा गये तो हैं।।

ललचा गए हो, पीना चाहते हो, पीते जाओ, परन्तु वास्तव में तो यह विष है मेरे भाई! इसमें शान्ति कहाँ मिलेगी? इसमें निराशा और दुःख के अतिरिक्त कुछ है नहीं। जब मनुष्य इन सब वस्तुओं को देखता है तो अपनी महत्ता को भूल जाता है, रोता हुआ कहता है–

न किसी की आँख का नूर हूँ, न किसी के दिल का क़रार हूँ।
जो किसी के काम न आ सके, मैं वो एक मुश्ते–गुबार हूँ।।

ठीक है भाई, तू है एक मुट्ठी–भर राख।

एक दिन मैं रेलगाड़ी से हरद्वार जा रहा था। एक बाबू मेरे पास ही बैठे थे। एक छोटी–सी पोटली उनके पास थी। उसे गोद में लिये थे। कभी एक हाथ में लेते, कभी दूसरे में। मैंने पूछा, "इसमें क्या है?" वे धीरे से बोले, "मेरे पिता जी के..." शायद वे बहुत दुःखी थे। इससे आगे वे कुछ कह नहीं पाये। परन्तु मैं समझ गया, पोटली में उनके पिता जी के फूल थे– मुट्ठी–भर राख। जल का भाग जल में चला गया, अग्नि का अग्नि में, आकाश का आकाश में, वायु का वायु में, अब केवल मुट्ठी–भर राख शेष है। मुझे भी मुट्ठी–भर राखवाला शेर याद आ गया।

ठीक है भाई! मुट्ठी–भर राख हो तुम। परन्तु यह भी तो सोचो कि कितनी मूल्यवान् राख हो तुम–

मत सहल हमें जानो फिरता है फ़लक बरसों।
तब ख़ाक के पर्दे से इन्सान निकलते हैं।।

बहुत कठिनता से बनता है मनुष्य। बहुत मूल्य है इस मुट्ठी–भर राख का। परन्तु मूल्य तब है जब मनुष्य मनुष्य बने। जैसा मैंने पूर्व कहा, आजकल सच्चा मनुष्य मिलता नहीं–

खुदा तो मिलता है इन्सार ही नहीं मिलता।
यह चीज वो है जो देखी कहीं–कहीं मैंने।।

इसलिए वेद भगवान् ने कहा– **'मनुर्भव'**– मनुष्य बन!

सूर्य सबके लिए है। वह सबका है। उसके लिए मनुष्य मनुष्य में कोई अन्तर नहीं।

ईश्वर ने बादलों को जन्म दिया। उन्हें कहा– "सबके लिए बरसो!" तभी से वे सबके लिए एक–से बरसते हैं। कभी ऐसा नहीं हुआ कि वर्षा की ऋतु हो, हिन्दू के खेत में बादल बरस जाये और मुसलमानों के खेत में न बरसे; बौद्ध के खेत में बरस जाये और चीनी के खेत में न बरसे। वह बरसता है तो सबके लिए, न बरसे तो किसी के लिए नहीं।

इसी प्रकार उसने वायु को आज्ञा दी, "सबके लिए चलो!" तब से वह चलती है। किसी का मत नहीं देखती, किसी

शेष पृष्ठ 6 पर ☞

मूर्तिपूजा-अज्ञानता की पराकाष्ठा, हिन्दुओं के विनाश का कारण

● कृष्णचन्द्र गर्ग

वेद, शास्त्र, उपनिषद्, मनुस्मृति आदि किसी भी वैदिक ग्रन्थ में मूर्तिपूजा का विधान नहीं है। ईश्वर निराकार है, उसकी कोई शक्ल सूरत नहीं है। इसलिए उसकी कोई मूर्ति नहीं बन सकती। गुरु नानक देव, कबीर, दादू, समर्थ गुरु रामदास, राजा राममोहन राय, महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती, आदि गुरुशंकराचार्य आदि महापुरुषों ने मूर्तिपूजा का पुरजोर खण्डन और विरोध किया है।

यजुर्वेद (32,3) में लिखा है – '**न तस्य प्रतिमा अस्ति**' अर्थात् उस परमात्मा की कोई मूर्ति नहीं है। उसका कोई नाप तोल नहीं है। कोई उसके समान नहीं है।

यजुर्वेद (40, 8) में लिखा है – ईश्वर सब जगह व्यापक है। उसका कोई शरीर नहीं है। उसके कोई नाक, मुंह, कान आदि नहीं है। उसके नस, नाड़ी आदि नहीं हैं। वह पवित्र है। वह कोई पाप नहीं करता। वह ज्ञानी है। उसका कोई बनाने वाला नहीं हैं।

अगर ईश्वर की कोई शक्ल सूरत होती भी तो उसकी मूर्ति पर दूध और फल रखने से उसे क्या लाभ? पिता की मूर्ति बनाकर उस पर दूध डालो जो नाली में बह जाए और उस पर फल मिठाई चढ़ाओ जिसे पुजारी अपने घर ले जाए। पिता को उससे क्या लाभ? खाता पुजारी है और कहते हैं कि भगवान को अर्पण किया है। ऐसे झूठ से भला होने वाला है क्या?

संसार में बौद्ध काल से पूर्व किसी भी रूप में मूर्तिपूजा प्रचलित न थी

मूर्तिपूजा के कारण मन्दिरों में सोना, चाँदी, हीरे, जवाहरात आदि चढ़ाया जाने लगा। तो अरब देशों के मुसलमानों ने भारत पर आक्रमण करने शुरू कर दिए। उन्होंने हज़ारों मन्दिरों और मूर्तियों को तोड़ा और वहां से सोना, चाँदी, हीरे, जवाहरात के रूप में अथाह धन लूटकर व सैकड़ों ऊँटों पर लादकर अपने देशों को ले गये। उन्होंने मन्दिरों के स्थान पर मस्जिदें बना दीं, पुजारियों को गाजर मूली की तरह काटा, बड़ी संख्या में हिन्दुओं का कत्लेआम किया, उन्हें तलवार के ज़ोर से मुसलमान बनाया, महिलाओं से बलात्कार किया, स्त्री–पुरुषों को बन्दी और दास बनाकर अरब देशों में ले जाकर भेड़ बकरियों की तरह बेचा गया। वहाँ उनसे नीच काम करवाए गए। इस प्रकार मूर्तिपूजा के कारण देश के धन की बेहद लुटाई हुई तथा हिन्दुओं को अकथनीय यातनाएं सहनी पड़ीं। शोक है कि हिन्दू आज भी उसी लाइन पर चल रहे हैं। इतना ही नहीं, मुसलमानों की कब्रों से भी खैर माँग रहे हैं।

हिन्दू प्राण–प्रतिष्ठा के बाद मूर्ति को एक चेतन सत्ता समझते हैं और उसमें रक्षा और सहायता करने का सामर्थ्य मानते हैं तथा यह भी मानते हैं कि मूर्ति अनर्थ भी कर सकती है। इस प्रकार हिन्दुओं के लिए मूर्तियों ने ईश्वर का स्थान ले लिया है जो हद दर्जे की अज्ञानता और मूर्खता है। मुस्लिम काल के एक हजार वर्षों की हमारी दुर्दशा और पराधीनता इस अन्धविश्वास का ही परिणाम है। ये मूर्तियां दूसरों की तो क्या अपनी रक्षा भी न कर सकीं, उन आक्रमणकारियों में से किसी एक की टांग भी न तोड़ सकीं। अच्छा होता हिन्दू मूर्तियों की सेवा करने की बजाए वीर नौजवानों को बढ़ावा देते जो उन आक्रमणकारियों के छक्के छुड़ा देते।

जो वस्तु जैसी है उसे वैसा ही जानना और मानना भावना है। चूने के पानी को दूध समझकर उसे मथने से मक्खन नहीं निकल सकता। हमने विश्वास किया कि मूर्तियां शत्रु को मार भगाएंगी, पर यह झूठा विश्वास था जो विनाशकारी निकला। मूर्तिपूजा पूजक को अन्धविश्वासी, मूर्ख और कायर बना देती है। आयुभर मूर्तियों के सम्पर्क में रहने वाले पण्डे–पुजारियों को देखने से यह सिद्ध हो जाता है।

मूर्ति–दर्शन मूर्ति–दर्शन ही है, ईश्वर–दर्शन नहीं है। जो लोग मूर्ति के दर्शन करके समझते हैं कि परमात्मा के दर्शन कर लिए वे गहरे अन्धकार में हैं। ईश्वर दर्शन का भाव ईश्वर को ज्ञान चक्षुओं से जानने से है, आंखों से देखने से नहीं। परमात्मा को बुद्धिबल और आत्मबल से ही जाना जा सकता है, आंखों से नहीं।

मनुष्य जिस वस्तु को देखता है उसके गुण तथा उसे बनाने वाले के सम्बन्ध में विचार आते हैं। मूर्ति को देखने से उसकी आकृति–आंखें, नाक, चेहरा, कपड़े, गहने आदि का ही विचार आएगा या उस मूर्ति को बनाने वाले का ध्यान आएगा, ईश्वर का नहीं। सूर्य, चन्द्र, तारे, पृथ्वी, पेड़, पौधे, पशु, पक्षी, मनुष्य आदि को देखकर उनके बनाने वाले ईश्वर का ध्यान आ सकता है।

मूर्तिपूजा के कारण ही बहुत से मन्दिरों में निर्दोष पशुओं को मारकर उनकी बलि दी जाती है। दक्षिण भारत में देवदासी प्रथा भी इसी मूर्तिपूजा की देन है जिसमें हजारों छोटी–छोटी लड़कियों का मूर्तियों से विवाह करके उन्हें वेश्या बनने के लिए मन्दिरों में छोड़ दिया जाता है।

भारतवर्ष में बीसों करोड़ लोग ऐसे हैं जिन्हें दो वक्त का पेट भर खाना भी नहीं मिलता, जिनके पास तन ढकने को कपड़े नहीं हैं, रहने का, शिक्षा का, चिकित्सा का प्रबन्ध नहीं है। हिन्दू समाज इन जीवित मूर्तियों की तरफ से उदास रहकर असंख्य धन पत्थर की मूर्तियों पर और मन्दिरों की तीर्थ यात्राओं पर खर्च कर रहा है जिससे लाखों निठल्ले पण्डे–पुजारी और महन्त ऐश का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। हिन्दू जाति का जो धन मूर्तिपूजा के नाम पर लुटता है उस धन से देश में शिक्षा का प्रसार करके तथा उद्योग धन्धे लगाकर सारे देश की गरीबी और बेरोजगारी दूर की जा सकती है।

शिवलिंग और जलहरी क्या हैं?

शिवलिंग की मूर्ति के चारों और जो जलहरी बनी होती है शिव पुराण के अनुसार वह पार्वती के गुप्तांग की नकल है। शिव पुराण, रुद्र संहिता, अध्याय 11 में लिखा है–

गिरिजां योनि रूपाँ च संस्थाप्य शुभं पुनः। तत्र लिंगं च तत्संस्थाप्य पुनश्चैवाभिमन्त्रयेत्। अर्थ– पार्वती के गुप्तांग की नकल की शुभ जलहरी बनाकर फिर उसमें लिंग को स्थापित करके उसकी पूजा करें।

आदिगुरु शंकराचार्य मूर्तिपूजा के सम्बन्ध में अपनी पुस्तक 'परा पूजा' में लिखते हैं–

तीर्थेषु पशुयज्ञेषु काष्ठपाषाणमृण्मये।
प्रतिमायां मनो येषां ते नरा मूढ़ चेतसः।।

अर्थ– तीर्थों में, पशुओं की बलि दिये जाने वाले यज्ञों में तथा लकड़ी, पत्थर और मिट्टी से बनी मूर्तियों में जिनका मन लगा है वे मनुष्य मूढ़ मति हैं।

स्वगृहे पायसं त्यक्त्वा भिक्षामिच्छति दुर्मतिः।
शिलामृतदारुचित्रेषु देवताबुद्धि कल्पिता।।

अर्थ– अपने घर में रखी खीर को छोड़कर मूर्ख भीख की इच्छा करता है। पत्थर, मिट्टी और लकड़ियों के चित्रों को देवता मानता है।

परमात्मा का स्वरूप क्या है –

एष सर्वेषु भूतेषु गूढोऽऽत्मा न प्रकाशते।
दृश्यते तु अग्रयया बुद्धया सूक्ष्मया सूक्ष्मदर्शिभि ।। (कठोपनिषद्)

अर्थ– वह परमात्मा सब प्राणियों अप्राणियों में छुपा हुआ है। वह सामने नहीं है। सूक्ष्म दृष्टि वाले लोग अपनी तीव्र और सूक्ष्म बुद्धि के द्वारा उसे जान लेते हैं।

ईश्वर हमारे हृदय में बसा हुआ है। वह हमारे सब कामों को देखता, सुनता और जानता है। अच्छे और बुरे कामों के अनुसार हमें सुख और दुख के रूप में फल देता है। ईश्वर अपने सारे काम स्वयं करता है। उसके कोई एजेंट या पीर, पैगम्बर नहीं हैं। वह पूर्ण न्यायकारी है, वह पक्षपात नहीं करता, रिश्वत नहीं लेता, सिफारिश नहीं मानता। ईश्वर को तथा उसकी न्याय व्यवस्था को जानने की जरूरत इसलिए है ताकि हम बुरे कामों से दूर रहें और दुख पाने से बचें।

ओ३म् खं ब्रह्म। (यजुर्वेद 40,17)

अर्थात् आकाश के समान व्यापक, सबसे बड़ा, सब जगत् का रक्षक ओ३म् है। **ओम् इति एतद् अक्षरम् उद्गीथम् उपासीत।** (छान्दोग्योपनिषद्)

अर्थात् ओम् जिसका नाम है और जो कभी नष्ट नहीं होता उसी की उपासना करनी चाहिए, और किसी की नहीं।

देवता कौन हैं–

मातृ देवो भव। पितृ देवो भव। आचार्य देवो भव। अतिथि देवो भव। (तैत्तिरीय उपनिषद्)

अर्थ– माता, पिता, अध्यापक और अतिथि देवता हैं क्योंकि ये हमें जीवन और ज्ञान देते हैं। ये पूजनीय हैं, इनकी सेवा करनी चाहिए।

जल, अग्नि, वायु, सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी आदि भी देवता हैं क्योंकि ये हमें जीवन देते हैं। हम इनकी पूजा नहीं कर सकते। परन्तु जल, वायु और पृथ्वी को शुद्ध रखकर प्राणिमात्र की पूजा कर सकते हैं।

ईश्वर सबसे बड़ा देवता है क्योंकि वह हमें सब कुछ देता है। पर हम उसकी पूजा नहीं कर सकते क्योंकि हमारे किसी भी काम से ईश्वर को कोई भी हानि–लाभ नहीं होता। हम उसकी उपासना कर सकते हैं। उपासना का अर्थ है पास बैठना। ईश्वर की उपासना का अर्थ है ईश्वर के न्यायकारी, सत्यकर्ता, ज्ञानवान, पवित्र, दयालु आदि गुणों को याद कर उन गुणों को अपने में धारण करना। ईश्वर आनंदस्वरूप है, उसके आनंद को प्राप्त करना, यही ईश्वर का नामस्मरण है। बृह्मा, विष्णु, महेश, गणेश आदि उस एक ईश्वर के ही नाम हैं, ये कोई अलग से देवता नहीं हैं।

s kcg831@yahoo.com

www.thearyasamaj.org

मलीन मानसिकता का 'मनोविज्ञान' व बढ़ता हुआ बलात्कार

● आचार्य आर्य नरेश

मैं नारी भोग्य वस्तु नहीं राष्ट्र-निर्माण शक्ति हूँ' यह नारी पूज्या है। आज समाज में बढ़ती हुई बलात्कार की घटनाओं से प्रत्येक सद्नागरिक चिन्तित है। सार्वजनिक फांसी आदि की सजा से इसे एक सीमा तक रोका जा सकता है। यह भी विचारना आवश्यक है कि वर्तमान में इन की अत्याधिक वृद्धि का मूल कारण क्या है? चारों ओर से स्वर गूंज रहा है कि समाज की मानसिकता को बदलना होगा। अर्थात् नारियों के प्रति पुरुषों का व्यवहार पहले ऐसा नहीं था जो अब हो गया है। व्यक्ति की अच्छी अथवा बुरी मानसिकता ही उसके कर्मों का आधार है। वैदिक आचार्यों का अनुभूत कथन है कि 'यद मनसा विचार्यात तद् कर्मणा करोति' अर्थात् जो व्यक्ति जैसा मन में संस्कार रखता है वैसा ही अच्छा या बुरा कर्म करता है। महाभारत काल में दुर्योधन ने कहा था-'जानामि धर्मम् न च मे प्रवृत्ति' अर्थात् मैं धर्म को जानता हूँ परन्तु अपने मन के गहरे कुसंस्कारों में बंधे होने के कारण पाप कर देता हूँ क्योंकि मेरे हृदय में विराजमान मन रूपी महाशक्ति मुझे पाण्डवों के विरुद्ध प्रेरित करती है। दुर्योधन का मन गन्दा किसके कारण हुआ? उसके मामा शकुनि व कुछ पिता धृतराष्ट्र के कारण। यह कटु सत्य है कि जो व्यक्ति जिस वातावरण में अथवा व्यक्तियों में अधिक रहता है, जैसी बातें सुनता तथा देखता है वह वैसा ही बन जाता है। इन्द्रिय संयम, ब्राह्मचर्य, प्रभु की व्यापकता तथा उसके द्वारा बिना क्षमा पाप कर्म का फल। सब आस-पास रहने वाली हमारी मां बहन बेटी हैं, नारियां राष्ट्र की आधार शिला हैं, वे राष्ट्र की जननी ही नहीं अपितु अपने सुधार्मिक-अनुशासित तथा देश-भक्ति पूर्ण संस्कारों और वातावरण से अच्छे परिवार, समाज और राष्ट्र का निर्माण करती हैं। हमें सदा नारी जाति के प्रति आदर युक्त विनम्रता की मानसिकता बनानी चाहिए। परन्तु सत्य यह है कि सुमानसिकता कहने मात्र से नहीं, संस्कारी वातावरण की निरन्तरता से बनती है। यदि कहने मात्र से व्यक्तियों की विचार धारा बदलने वाली होती तो आज दूरदर्शन पर अनेक नामी प्रवचन कर्ताओं के प्रवचनों से भारत स्वर्ग बन गया होता। क्या बराबरी व प्रगति का प्रमाण पत्र मात्र अंगप्रदर्शन है?

मानसिकता का परिवर्तन व्यवहारिक आचरण पर निर्भर करता है एवं उसका सच्चा गहरा संस्कार विद्यार्थी काल के कोमल जीवन पर पड़ता है। अपनी माँ बहन बेटी के समान महिला भात्र के प्रति श्रेष्ठ मानसिक संस्कार डालने वाला किसी पाठ्यक्रम का 'पाठ' प्रथम से 12वीं कक्षा अथवा किसी स्कूल कालेज या अन्य भारत सरकार द्वारा संचालित संस्थान में क्या पढ़ाया जाता है? जब ये पाठ प्राचीन आर्यावर्त भारत में पढ़ाये जाते थे तब किसी एक आध दुष्ट मानसिकता की घटना होती थी। लोग ध्यान दें कि मादा पशु लज्जायुक्त होने से नग्न रहती है एवं नर पशु (बच्चा इच्छा बिना) बलात् भोग नहीं करते। मर्यादा ही रोकेगी जो हर गली, हर ग्राम, हर नगर, हर सड़क व हर संस्थान में बलात्कार हो रहा है। गंदी मानसिकता के परिवर्तन हेतु कितने घर, विद्या संस्थान अथवा कार्य संस्थान हैं जहां की दीवारों पर चरित्र, ब्रह्मचर्य, संयम अथवा महिलाओं को मां, बहन, बेटी एवं पुरुषों को पिता, चाचा व भाई समान देखने की शिक्षा दी गई है? कितनी ऐसी लड़कियां व महिलाएं हैं जो अपने आप को बहन, दीदी, चाची वा माता का सम्बोधन सुनने पर प्रसन्न होंगी? कितने ऐसे लड़के एवं पुरुष हैं जो लड़कियों और महिलाओं द्वारा भाई, चाचा, मामा अथवा पिता का सम्बोधन सुनने पर प्रसन्न होंगे? आज यदि कॉलेज में कोई पवित्र मानसिकता वाले लड़के अथवा लड़कियां अपने सहपाठियों को भाई वा बहन कह के पुकार दे तो उनकी हंसी उड़ाकर अपमानित कर दिया जाता है कि यह कितने पिछड़े हुए विचारों का है। ध्यान रहे सद् उपदेश से सद् संस्कार व उसके अनुसार क्रिया करने से ही मानसिकता तथा वातावरण बनता है। दुःख से कहना पड़ता है कि अंग्रेजियत तथा अकबरी दुष्टता ने पुरुषों एवं महिलाओं के मध्य भाई-बहन, पिता-पुत्री की पावन भावना को समाप्त करके महिलाओं को चीज मस्त, मुन्नीबाई, जलेबी बाई, हलकट जवानी, चोली के नीचे वाली, फैवीकोल व शीला बाई बना दिया है एवं पुरुषों की मानसिकता को उनका भोक्ता।

क्या इन सब अश्लीलता तथा कामुकता पूर्ण नग्न नृत्यों और अर्धनग्न अंग्रेजियत से पुरुषों की मानसिकता अच्छी बन सकती है? क्या भाई-बहन के स्थान पर हाय-बाय कहने से बलात्कार घटेंगे? ध्यान रहे घर की मां, बहन, बेटी भी महिला है परन्तु उसके प्रति इसलिए मानसिकता पवित्र होती है क्योंकि वहां मन में बाल्य काल से उनके प्रति मां बहन भाई कहने एवं समझाने की भावना भरी जाती है। बलात्कारों को 99 प्रतिशत समाप्त करने हेतु 'नारियां' धरती भर के करोड़ों पुरुषों को योगी बनाने का झूठा स्वप्न न देखकर नग्न कुप्रदर्शन व भोग्य चीज बन कर परोसने का प्रयास न करें। पैरों को काटों से बचाने हेतु, सम्पूर्ण धरा चमड़ा चढ़ाने की अपेक्षा अपने पैरों को जूतों से ढककर रखना ही बुद्धिमत्ता है। भारतीय संस्कृति में श्रृंगार का विरोध नहीं नग्नता का विरोध है। किसी को 'लवण भास्कर' खिलाकर भूख हटाने की व जमाल घोटा खिलाकर शौचालय न जाने की बात करना महामूर्खता है। वैदिक आचार्यों का अनुभूत विज्ञान है कि कार्य का होना कारण पर निर्भर करता है। केवल कहने से मानसिकता नहीं बदलती। क्या नारी स्वतन्त्रता नरवत एक कच्छे में खुले स्नान से है? पेट्रोल व आग को बिना सुरक्षित कवच के साथ रखकर न जलने की बात कहने वाले क्या बुद्धिमान हैं? बलात्कार उन देशों में कम से कम हैं जहाँ नारी की नग्नता पर प्रतिबन्ध व कुकर्मी को फांसी की सजा है। विवाह से पूर्व लड़के-लड़की का अनैतिक मिलन, अश्लील नग्न सिनेमा, सीरियल-विज्ञापन व शराब पर प्रतिबन्ध लगे। अच्चे वातावरण से अच्छी मानसिकता ही बलात्कार का पूर्ण समाधान है। यदि किसी देश में नग्नता-अश्लीलता होते हुए भी बलात्कार नहीं होते तो वहां के लोगों का मन खुले सैक्स से मिठाई के हलवाई के समान भर चुका है।

सम्पर्क- उद्गीथ स्थली (हि.प्र.)
फोन न. 9418021091

☞ पृष्ठ 4 का शेष

घोर घने जंगल में

का सम्प्रदाय नहीं पूछती। ऐसा कभी नहीं हुआ कि मुसलमान के घर प्रविष्ट होने से उसने इन्कार कर दिया हो या हिन्दू के घर में डेरा डालकर बैठ गई हो।

प्रभु की दी हुई प्रत्येक वस्तु सेक्युलर है, किसी एक धर्म या सम्प्रदाय, किसी एक जाति या देश के लिए नहीं, सबके लिए है। इसी प्रकार आदि सृष्टि में दिया हुआ प्रभु का यह ज्ञान- वेद भी सेक्युलर है। इसमें कहीं नहीं लिखा कि तुम हिन्दू बनो या मुसलमान, पंजाबी बनो या मद्रासी, हिन्दुस्तानी बनो या चीनी। वेद तो कहता है 'मनुष्य बन!'

वेद का ज्ञान प्रदान करनेवाले ने ऐसी बात क्यों कही? इसीलिए कि उन्हें भविष्य की बात का पता था। उन्हें ज्ञात था कि इस सृष्टि में कभी-कभी ऐसा समय भी आता है जब वेद विद्यमान होता है परन्तु वेद को माननेवाले, उसपर आचरण करनेवाले नहीं रहते।

हमारे देश में आज सेक्युलर राज्य है। ऐसा राज्य है जिसका सम्बन्ध किसी धर्म, पन्थ, मत या सम्प्रदाय से नहीं। वह सबको एक-समान देखता है। सबके भले के लिए प्रयत्न करता है। अच्छी बात है यह, परन्तु धर्मनिरपेक्षता की यह भावना आज ही पैदा नहीं हुई; सृष्टि के आदि से विद्यमान है। स्वयं उस ईश्वर से इसका जन्म होता है जिसकी हम पूजा करते हैं।

सृष्टि बनी तो ईश्वर ने सूर्य को जन्म दिया और उसे आज्ञा दी, "सबको प्रकाश दो! सबके लिए जीवन और गर्मी दो!" तब से यह सेक्युलर सूर्य लगातार अपना काम कर रहा है। भगवान् का बनाया हुआ सूर्य सबके लिए है। आप किसी भी धर्म को मानिये परन्तु 'मनुर्भव!'- मनुष्य बनो! यह नहीं कहा कि आर्यसमाजी बनो, केवल यह कहा कि मनुष्य बनो! निराश होकर यह मत कहो-

उम्रे-दराज माँग के लाये थे चार दिन।
दो आरजू में कट गये दो इन्तज़ार में।।

कामनाएँ पूरी हो सकती हैं, प्रतीक्षा समाप्त हो सकती है, आनन्द की बाढ़ तुम्हारे लिए उछल सकती है, सुख का सागर उमड़ सकता है, शर्त केवल एक है-मनुष्य बनो। थकी-हारी आवाज में कभी मत कहो-

बस कि दुश्वार है हर काम का आसाँ होना।
आदमी को भी मयस्सर नहीं इन्साँ होना।।

कठिन नहीं है, यह बात। मनुष्य ही मानव बनता है। ईश्वर ने मनुष्य को मानव बनने के लिए उत्पन्न किया है। आवश्यकता है प्रयत्न करने की। ठीक मार्ग पर ठीक विधि से प्रयत्न करो तो आपको सफलता मिलेगी अवश्य। जिसे यह सफलता मिलती है वह सच्चे अर्थों में मनुष्य बनता है। उसी को परमात्मा का दर्शन भी मिलता है। इसीलिए वेद ने कहा, 'मनुष्य बनो!' उपनिषद् के ऋषि ने कहा, 'ये सब बातें, ईश्वर को प्राप्त करने की विधि में तुम्हारे लिए कहता हूँ- तुम, जो मनुष्य हो।'

समग्र क्रान्ति के अग्रदूत महर्षि दयानन्द

जन्म– गुजरात (काठियावाड़) प्रान्त के मोखी राज्य के एक छोटे से गाँव टंकारा में सन् 1824 में एक औदीच्य ब्राह्मण कर्षण जी तिवारी व माता यशोदा बाई के घर दिनांक 12 फरवरी शनिवार के दिन एक पुत्र रत्न का जन्म हुआ। बालक का जन्म मूल नक्षत्र में होने के कारण माता–पिता ने 'मूल शंकर' नाम रखा।

कर्षण जी एक सम्पन्न जन थे। सरकार में सम्मान था। औदीच्य ब्राह्मण सामवेदी थे परन्तु मूल शंकर ने बड़े परिश्रम शुक्ल यजुर्वेद का अध्ययन किया था।

आत्म बोध:– कर्षण जी तिवारी शिव के अनन्य भक्त थे। मूल शंकर जब 14 वर्ष के ही थे। उन्हों ने पिता के आग्रह पर, माता के विरोध के बावजूद, शिवरात्रि का उपवास किया। पिता गांव के शिव मन्दिर में पूजा–अर्चना हेतु ले गये। उन्हें बताया गया कि जो भक्त पूरी रात जाग कर शिव की अराधना करता है उसे साक्षात शिव के दर्शन होते हैं।

सभी पुजारी एवं भक्त जन शनैः–शनैः निद्रा देवी की गोद में लीन हो गये। परन्तु मूल शंकर आंखों पर पानी के छींटे मार–मार कर शिव दर्शन की कामना लिए जागते रहे। यह क्या? देखते क्या हैं कि मूषक राज शिव मूति चढ़ कर उछल कूद मचा रहे हैं तथा शिव को अर्पित नैवेद्य का भक्षण कर हरे हें तथा मूर्ति पर ही मल–मूत्र का त्याग कर रहे हैं। बालक के मन में बिजली की भाँति विचार कौंध गया कि क्या यही वह जगत् नियन्ता शिव हैं जो इस क्षुद्र से चूहे को भी नहीं हटा सकते। नहीं नहीं, यह सच्चा शिव नहीं हो सकता। तुरन्त पिता को जगाया उनके सम्मुख अपनी शंका रखी। परन्तु कर्षण जी उनकी शंका का समाधान नहीं कर पाये। बालक मूल शंकर ने उपवास तोड़ दिया तथा घर लौट आया। बार–बार मन में एक ही विचार आ रहा था कि यह वह महादेव नहीं हो सकता जिसकी कथा सुनते आये हैं कि वे अपने पाशुपतास्त्रसे बड़े–बड़े प्रचण्ड दैत्यों का संहार करते हैं, वे एक क्षुद्र से जीव चूहे को अपने ऊपर से नहीं हटा सकते।

मूल शंकर को दो छोटी बहनें तथा एक छोटा भाई था अर्थात् कर्षण जी की कुल चार संतानें थीं दो पुत्र और दो पुत्रियां। मूल शंकर सबसे बड़े थे।

वैराग्य की उत्पत्ति : मूल शंकर 16 वर्ष के थे कि उनकी छोटी बहिन जिस की आयु 14 वर्ष थी, उसकी हैजे से मृत्यु हो गई। परिवार के सभी लोग रुदन कर रहे थे परन्तु मूल शंकर की आंखों में आंसू नाम को नहीं थे। उनके पिता ने तो उन्हें पाषाणा हृदयी तक कह डाला। मूल शंकर तो जीवन–मृत्यु की गुत्थी को सुलझाने में लगा था। सोच रहा था कि क्या सभी को मत्यु का ग्रास होना पड़ेगा।

यही प्रश्न कभी सिद्धार्थ (गौतम) के सम्मुख खड़ा हुआ था जब उन्होंने एक रोगी को, एक कमर झुकाये वृद्ध को तथा एक मृतक को देखा था। गौतम के हृदय में भी वैराग्य उत्पन्न हो गया था तथा वह मृत्यु पर विजय पाने हेतु घर की शान शौकत छोड़ कर निकल पड़े थे।

उसी भाँति आज पुनः मूल शंकर के हृदय में वैराग्य उत्पन्न हो गया।

सिद्धार्थ से पूर्व भी लोगों का पाला रोग से, वार्द्धक्य से पड़ता तथा वे परिजनों को मृत्यु का ग्रास होते देखते थे। मूल शंकर से पूर्व भी लोग चूहे को शिवलिंग पर चढ़ते हुए देखा करते होंगे, परन्तु यह भाव मूल शंकर के ही मन में क्यों आया कि यह वास्तविक ईश्वर नहीं है तथा बहिन की मृत्यु पर उन्होंने मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की ठानी। स्पष्ट है कि कोई पुण्य आत्मायें ही होती हैं जो लोक कल्याणार्थ अपनी सुख सुविधाओं को तिलाञ्जलि देने को उद्यत होती हैं, बहिन की मृत्यु के दो वर्ष उपरान्त उनके चाचा जो उन से अगाध स्नेह रखते थे का देहावसान हुआ। उन की मृत्यु पर मूल शंकर बहुत रोये। हृदय में वैराग्य गहरा गया।

गृह त्याग :– सन् 1846, बाईस वर्ष की आयु में, सच्चे शिव की खोज में मूल शंकर ने गृह त्याग कर दिया। जब मूल शंकर घर से निकले थे तो उनके पास कुछ रुपये थे तथा तीन अंगूठियां डाली हुईं थीं जो उनसे तथाकथित साधुओं ने यह कहकर ठग लीं कि जो सच्चे वैरागी होते हैं, उनको धन से मोह नहीं होना चाहिए।

मूल शंकर से शुद्ध चैतन्य:– घूमते घामते मूल शंकर सायला नामक स्थान पर पहुंचे जहां उनकी भेंट एक ब्रह्मचारी से हुई जिसने इन्हें नैष्ठिक ब्रह्मचारी होने का परामर्श दिया। मूल शंकर ने ब्रह्मचर्य व्रत लेकर गेरुए वस्त्र धारण कर लिये।

सिद्धपुर के मेले में पिता से भेंट : किसी परिचित वैरागी ने कर्षण जी को पत्र द्वारा मूल शंकर को सिद्धपुर के मेले में होने की सूचना दी। सिद्धपुर के मेले में पिता ने धर दबोचा। मूलशंकर को चार सिपाहियों की मदद से घर को वापिस ले चले। परन्तु अवसर मिलते ही मूल शंकर सिपाहियों की नज़र बचा कर पुनः खिसक गये।

सन्यास की दीक्षा : अब तक शुद्ध चैतन्य पच्चीसवें वर्ष में प्रवेश कर चुके थे। नर्मदा तट पर घूमते हुए चाणोद के निकट उनकी भेंट स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से हुई। शुद्ध चैतन्य ने उनसे सन्यास की दीक्षा देने की प्रार्थना की। पहले तो उन्होंने इनकार किया और कहा कि मैं तो महाराष्ट्रीयन हूँ। आप किसी गुजराती मूल के सन्यासी से दीक्षा लें। परन्तु बहुत अनुनय विनय के बाद उन्होंने शुद्ध चैतन्य को सन्यास की दीक्षा दी तथा उनको स्वामी दयानन्द सरस्वती नाम दिया।

विद्याध्ययन का प्रयास

सन् 1854 में स्वामी दयानन्द हरिद्वार में स्वामी सम्पूर्णानन्द से मिले तथा उन से व्याकरण, अष्टाध्यायी आदि पढ़ाने के लिये प्रार्थना की। उस समय स्वामी सम्पूर्णानन्द की आयु 108 वर्ष थी। उन दिनों उन्होंने मौन व्रत रखा हुआ था। उन्होंने स्वामी दयानन्द को लिखकर बताया कि वे अब वृद्ध हो चुके, हैं, इस हेतु पढ़ाने में असमर्थ हैं। उन्होंने दयानन्द को मथुरा में स्वामी विरजानन्द से जाकर विद्याध्ययन करने का परामर्श दिया। परन्तु दयानन्द जी ने वहां कुछ दिन रह कर अनुभव किया कि स्वामी सम्पूर्णानन्द सरस्वती एक समर्पित, क्रान्तिकारी थे। उनके निर्देश पर सारे देश में 500 से अधिक सन्यासी अंग्रेजी राज्य के विरोध में वातावरण तैयार कर रहे थे।

1857 की क्रान्ति में स्वामी दयानन्द का योगदानः

स्वामी जी ने अपने स्वरचित जन्म परिचय में 1847 से 1856 तक जीवन वृतान्त सविस्तार लिखा है। 1857 से 1859 तक कुछ उल्लेख नहीं किया। पुनः 1860 के बाद का वृतान्त लिखा है। इस से स्पष्ट हो जाता है कि इस काल में वे स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भाग ले रहे थे।

स्वतन्त्रता की क्रान्ति की सभाओं को सम्बोधित करते थे। सन् 1855 के आरम्भ में प्रथम सभा हरिद्वार में हुई। इस सभा में सम्राट बहादुर शाह जफ़र के शहज़ादे फ़िरोज शाह, अजीमुल्ला खां, रंगू बापू आदि सम्मिलित हुए। इस सभा में 1500 लोग उपस्थित हुए। दूसरी सभा गढ़ गंगा के मेले के अवसर पर गंगा तीर पर हुई जिसमें 2500 लोगों ने भाग लिया। तीसरी सभा अक्टूबर 1855 में हरिद्वार में हुई। इस सभा में 565 सन्यासियों ने भाग लिया जिसमें 195 मुसलमान सूफ़ी सन्तों ने भाग लिया। इन सभाओं को स्वामी दयानन्द सम्बोधित करते थे। इस सभा की योजना स्वा. ओमानन्द (पूर्णानन्द के गुरु) तथा स्वामी पूर्णानन्द ने तैयार की थी तथा इसकी व्यवस्था स्वा. पूर्णानन्द सरस्वती के शिष्य प्रज्ञा चक्षु स्वामी विरजानन्द ने की।

सन् 1857 की क्रान्ति – यह ऐतिहासिक तथ्य है कि 1857 की क्रान्ति के सूत्रधार मंगल पाण्डे, झांसी की रानी लक्ष्मी बाई, तान्त्या टोपे, दिल्ली के सम्राट बहादुरशाह ज़फ़र तथा अजीमुल्ला खां थे।

यह बाबा औघड़ नाथ कौन था– इस साधु का उल्लेख उस समय के सरकारी अभिलेखों में उपलब्ध है। मेरठ में आज भी काली पलटन में बाबा औघड़नाथ का शिव मंदिर विद्यमान है। माना जाता है कि यह बाबा औघड़नाथ और कोई नहीं बल्कि स्वयं स्वामी दयानन्द ही थे जिन्होंने अपना छद्म नाम औघड़ नाथ रखा था।

यह बाबा अप्रैल, मई व जून की मेरठ की तपती गर्मी में 9 बड़े मटकों में रात्रि को पानी भर कर रखते थे। दिन भर प्यासे सैनिकों को जल पिलाते थे। जल पिलाते समय बाबा सैनिक से पूछते थे कि वह हिन्दू है या मुसलमान? यदि वह कहता 'हिन्दू' तो उस से कहते कि जिन कारतूसों को मुंह से छीलते हैं, उन में गौ की चर्बी लगी होती है और मुसलमानों को भी इस तथ्य से अवगत कराते कि कारतूसों में सुअर की चर्बी लगी होती है। इस प्रकार से हिन्दू–मुसलमान सबको धर्म विरुद्ध कार्य कराया जाता है। इस प्रकार वै सैनिकों में अंग्रेज़ी राज्य के विरुद्ध विद्रोह की भावना भर रहे थे।

मंगल पाण्डे बाबा के प्रिय शिष्यों में से थे। जब उसको तबादला मेरठ से बैरकपुर हुआ तो उस से पूर्व रात्रि को वह बाबा से आशीर्वाद लेने आए थे।

स्वामी दयानन्द की आत्म कथा के आधार पर भी तथा उपरोक्त कुछ घटनाओं को दृष्टि गत करते हुए इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है कि ऋषि दयानन्द की स्वतन्त्रता संग्राम में सक्रिय भूमिका रही है।

स्वामी दयानन्द का स्वराज्य के प्रति दृष्टिकोण:–

स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के छठे सम्मुलास में स्वराज्य के बारे में कहा है– 'एक को स्वतन्त्र राज्य का अधिकार नहीं देना चाहिए किन्तु राजा जो सभापति, तदाधीन सभा, समाधीन राजा, राजा और सभा प्रजाधीन तथा प्रजा राजसभा के आधीन। '

दण्ड व्यवस्था

महर्षि दयानन्द का मानना है कि दण्ड ही प्रजा का शासनकर्त्ता है, सब प्रकार से रक्षक है। सोते हुए प्रजास्थ मनुष्यों में जागता है।

शेष पृष्ठ 8 पर ☞

अंगदान जीवन के लिए वरदान

अंग प्रत्यारोपण आधुनिक चिकित्सा विज्ञान की एक अद्भुत उपलब्धि है जिससे ऐसी बीमारियां ठीक हो जाती हैं जो अंग के पूरी तरह से खराब हो जाने से होती हैं। इससे ऐसे मरीज अधिक समय तक जिन्दा रह सकते हैं जिन्होंने जीने की आशा छोड़ दी है परन्तु यह पूर्णतया उन अंगदाताओं और उनके परिवारों पर निर्भर करता है जो इस जीवन रक्षक दान को अपनी इच्छा से दूसरे को देना चाहते हैं। हर साल सैकड़ों लोग अंग प्रत्यारोपण के अभाव में मर जाते हैं। किन्तु अंगों का हमेशा सख्त अभाव रहता है क्योंकि अंगदान करने वालों की संख्या कम है और इन्हें लेने वालों की संख्या अधिक है और यह अंतर लगातार बढ़ता ही जा रहा है। यहां आप अपने अंगदान की शपथ लेकर लोगों की मदद कर सकते है।

अंगदान के बारे में पूछे जाने वाले कुछ सामान्य प्रश्न नीचे दिए गए है:

1 अंगदान कौन कर सकता है?

किसी भी उम्र, जाति या लिंग का व्यक्ति अंगदान कार्ड पर हस्ताक्षर कर अपने अंगदान करने की शपथ ले सकता/सकती है। 18 वर्ष से कम उम्र के व्यक्ति के लिए माता-पिता या विधिमान्य अभिभावक की सहमति आवश्यक है। विकल्प के रूप में दिमागी तौर पर मृत व्यक्ति के परिजन उसके अंगदान कर सकते हैं। डॉक्टरी तौर पर अंगदान के लिए उपयुक्त है या नहीं इसका निर्धारण व्यक्ति के दिमागी तौर पर मृत हो जाने के समय किया जाता है।

2. दिमागी तौर पर मृत होना क्या है?

गंभीर मस्तिष्क चोट, स्ट्रोक, ब्रेन ट्यूमर या अन्य गंभीर बीमारियों के कारण मस्तिष्क पूर्ण रूप से क्षतिग्रस्त हो जाता है जिससे मस्तिष्क का स्टेम काम करना बंद कर देता हैं और ऐसे मरीज को दिमागी तौर पर मृत कहा जाता है। दिमागी तौर पर मृत व्यक्ति डॉक्टरी और कानूनी दृष्टि से मृत होता है और वह ठीक नहीं हो सकता। मेकेनिकल वेंटिलेशन जैसी कृत्रिम सहायता और दवाओं की मदद से एक सीमित अवधि के लिए तो दिल की धड़कन को जारी रखा जा सकता है परन्तु डॉक्टरी सहायता के बावजूद अंततः यह काम करना बंद कर देगा। भारत सरकार द्वारा जारी अंग प्रत्यारोपण अधिनियम 1994 में दिशा-निर्देशों के अनुसार दिमागी तौर पर मृत होने की घोषणा 4 डॉक्टरों की टीम द्वारा 6 घंटे के अंतराल पर दो बार किए गए विशिष्ट परीक्षण के बाद की जाती है।

2. किन अंगों का दान किया जा सकता है?

चिकित्सा विज्ञान हृदय, फेफड़े, किडनी, लीवर, पैन्क्रियाज जैसे अंगों और कॉर्निया, त्वचा, हृदय, वॉल्व, टेंडन और हड्डियों जैसे ऊतकों के प्रत्यारोपण में सफल हुआ है। जिसमें किडनी, लीवर तथा कॉर्निया प्रत्यारोपण की सुविधा इस समय आर्मी हॉस्पिटल (आर एंड आर) में उपलब्ध है।

3. क्या अंगदान के बाद शरीर विकृत हो जाता है?

नहीं। अंगों को विशेष रूप से प्रशिक्षित शल्य चिकित्सकों की टीम द्वारा अत्यधिक सावधानीपूर्वक निकाला जाता है। यह काम ऑपरेशन थिएटर में जर्महीन स्थिति में किया जाता है। अंगों को निकालने के बार शल्य चीरे को पूरी सावधानी और सफाई से सिलकर उन पर मरहम पट्टी कर दी जाती है। उनके संबंधी यदि चाहें तो ऑपरेशन के बाद उन्हें देख सकते हैं। अंगों को निकालने कि क्रिया से व्यक्ति की पारम्परिक अंत्येष्टि या दफनाने की क्रिया में कोई रुकावट पैदा नहीं होती है।

5. क्या आपको अंगदाता जानकर वे (डॉक्टर) मरने के लिए छोड़ देंगे?

नहीं। रोगी की देखभाल करने वाले डॉक्टर उसे बचाने की हर संभव कोशिश करते हैं। यदि इसके बावजूद रोगी दिमागी तौर पर मृत हो जाता है तभी अंगदान पर विचार कर डॉक्टरों की एक अलग टीम बुलाई जाती है। चूंकि रोगी मर चुका होता है इसलिए वेंटिलेटर के जरिए उसे आक्सीजन दिया जाता है ताकि दिल धड़कता रहे और प्रत्यारोपण के लायक अंगों को बनाए रखने के लिए रक्त का संचार होता रहे।

6. यदि मेरी धार्मिक आस्था अंगदान की अनुमति न दे, तो फिर क्या किया जाए?

ऐसा कोई भी धर्म नहीं है जो अंगदान के लिए मना करता हो। वास्तव में अलग-अलग धर्मों के अंगदान संबंधी विचार नीचे दिए गए हैं:

(i) **हिन्दू धर्म :** "ऐसा कहा जाता है कि आत्मा अदृश्य है। यह मानते हुए हमें शरीर का शोक नहीं करना चाहिए"। दान सबसे बड़ा त्याग है। भगवदगीता 2 :25

(ii) **सिख धर्म :** "मृतात्मा अपने पुण्य कर्मों से जीव से जुड़ी रहती है"-गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, पृष्ठ 143

(iii **इस्लाम धर्म :** "एक भी व्यक्ति की जान बचाने वाला इंसान पूरी इंसानियत की जान बचाने के बराबर है"-पवित्र कुरान, अध्याय 5 :32

(iv) **ईसाई धर्म :** त्याग और परोपकार ईसाई धर्म का मूलभूत सार है जिसके सिद्धान्त हमें सिखाते हैं कि जिन कामों की उपेक्षा हम दूसरों से करते हैं पहले वे स्वयं करें। ईसा मसीह का उपदेश ....." जो तुम्हें उदारता से मिला है, उसे उदारता से दें" मैथ्यू, अध्याय 10:8

(V) **बौद्ध धर्म :** अंगदान एक अत्यंत भलाई का काम है। यह किसी भी रूप में उस "चेतनता" को हानि नहीं पहुंचाता जिससे शरीर मुक्त हो रहा है। इसके ठीक विपरीत, हमारे इस उदार कार्य से हमारे पुण्य कर्म और जुड़ जाते हैं"। सौग्याल रिंपोचे : जीवन और मृत्यु संबंधी तिब्बती ग्रंथ।

7. अंगदान के बारे में कानून क्या कहता है?

भारत सरकार ने मानव अंग प्रत्यारोपण अधिनियम 1994 पारित कर अंगदान को वैधता प्रदान कर दी है।

8. क्या हस्ताक्षरित अंगदान कार्ड मिलने के बाद भी परिवार से अंगदान की अनुमति ली जाती है?

हाँ। यह इसलिए जरूरी है कि आप अपना निर्णय अपने परिवार के सदस्यों को बता दें ताकि आपकी इच्छा पूरी करने में उन्हें आसानी हो?

अंगदान यह सुनिश्चित करता है कि आप मरने के बाद भी किसी को जिन्दगी का तोहफा देने की स्वस्थ विरासत अपने पीछे छोड़कर जा रहे हैं। अंगदाताओं के परिवारों का कहना है कि अंगदान से उन्हें न तो किसी प्रकार का नुकसान होता है न ही कोई परेशानी होती है। उनसे पूछकर उन्हें किसी और रोते बिखलते परिवारों को जीवनदान देने का अवसर प्रदान किया जाता है। इसलिए अंगदान की शपथ और दूसरों को असयम ही अपना बहुमूल्य जीवन गंवाने से बचाने में मदद करें

सौजन्यचः सशस्त्र सेना अंग पुनरुद्धार एवं प्रत्यारोपण प्राधिकरण (ए ओ आर टी ए)
आर्मी हॉस्पिटल (रिसर्च एंड रेफरल)
टेलिफोनः 233318133
ई-मेलः aorta.ahrr@gmail.com

☞ पृष्ठ 7 का शेष

समग्र क्रान्ति...

मनु ने दण्ड व्यवस्था सुदृढ़ बनाने का विधान किया है। जितना बड़ा अपराध हो उतना ही बड़ा दण्ड होना चाहिए। जितना समृद्ध व शक्तिशाली व्यक्ति हो उसे उतना ही सख्त दण्ड होना चाहिए।

परन्तु विडम्बना तो यह है कि जो जितना शक्तिशाली है, राज्य में उस की पहुंच है। उसे उतना ही दण्ड कम मिलता है। ज़रा आप स्वयं सोचें कि एक अपराध के लिये, एक धनी व्यक्ति को भी एक हजार रुपया दण्ड और एक निर्धन जो मात्र 20/- प्रतिदिन कमाता है उसे भी एक हज़ार रुपये का दण्ड। यह तो ऐसा हुआ कि एक अपराध के लिये हाथी को भी 50 कोड़े मारने का दण्ड तथा एक मेमने (बकरी का बच्चा) को भी वही दण्ड। पाठक गण समझ सकते हैं कि इस दण्ड से तो बकरी के बच्चे की तो बोलो ही राम हो जाएगी जबकि हाथी को 20 कोड़ों से कुछ प्रभाव पड़ने वाला नहीं है। वर्तमान कानून एक सम्पन्न, समर्थ तथा कानून की पूर्णतया जानकारी रखने वाले के लिये भी कानून का वही प्रावधान है तथा असमर्थ व निर्धन के लिये भी वही दण्ड है। यही कारण है कि देश में अत्याचार, व्यभिचार और भ्रष्टाचार में दिन प्रतिदिन वृद्धि हो रही है। करोड़ों की रिश्वत देकर धन के बलबूते खुले आम घूमता है। जो वर्तमान की दण्ड व्यवस्था है पूर्णतया निष्क्रिय है फलस्वरूप देश में अत्याचार, अनाचार, भ्रष्टाचार तथा व्यभिचार का बोलबाला है।

स्वदेशी राज्य उत्कृष्ट

स्वामी जी अपने व्याख्यानों में तथा अपने ग्रन्थों में स्वदेशी राज्य का महत्त्व दर्शाते हुए कहते हैं, "कोई कितना ही कहे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि व उत्तम होता है। मतमतान्तर के आग्रह रहित अपने-पराये का पक्षपात शून्य प्रजा पर पिता माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं।"

अन्य क्रान्तिकारी सुधार

दलित उद्धार:- स्वामी दयानन्द ने दलित उद्धार हेतु व्यापक कार्य किये। उन्होंने दलितों को यज्ञोपवीत करा कर विशाल हिन्दू जाति का अंग बनाने का अनथक प्रयास किया। पौराणिक जगत् में दलितों को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं था। उन्होंने कहा कि ईश्वर किसी भी मनुष्य को जल, वायु तथा अपनी कृपा में भेद भाव नहीं रखते तो हमें क्या अधिकार है कि हम

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

षड् विकारों से ही उन्नति और अवनति

● डॉ. सर्वेश वेदालंकार

मनुष्य में षड्–विकार होते हैं– काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर। ये प्रकृतिज हैं और संसार के निर्माण में सहयोगी हैं। बहुधा यह माना जाता है कि मनुष्य में यह ही षड् विकार पशुवत वृत्ति को उत्पन्न करके कुकर्म की ओर प्रेरित करते हैं और पतन की ओर ले जाते हैं। परन्तु ये षड् विकार ही मनुष्य को उन्नति की ओर भी ले जाते हैं। जो मनुष्य ऊपर चढ़ जाता है गिरता वही है। गिरने वाला क्या गिरेगा! वह तो पहले से ही गिरा हुआ है। मनुष्य यह भूल जाता है कि हमारी उन्नति और विकास कैसे हुआ है? जिसके आश्रित होकर वह उन्नति करता है वह उसी को ही भूल जाता है। और बुराई में निमग्न हो जाता है। दुनियाँ के सभी संत–महात्मा इन विकारों की आलोचना व बुराई सबसे अधिक करते हैं और साधारण लोगों से कहते हैं काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि को त्याग दो; इनके वश में न हो अन्यथा नर्क के भागी हो जाओगे। बार–बार हर–बार सभी संतों का इसी पर जोर होता है। इसको त्याग दो, इसको छोड़ दो–वे इसका केवल एकांगी पक्ष हो देखते हैं और दुनियाँ को एकांगी पक्ष ही दिखलाने का प्रयास कर सभी को इनसे भयभीत करते रहते हैं। सदैव नकारात्मकता ही प्रदर्शित कर अवनति की बात करते रहते हैं और कुछ साधारण मनुष्य इनसे घृणित होकर सब–कुछ त्याग भी देते हैं। वे अपना जीवन तो नष्ट करते ही हैं साथ में न जाने कितनी जिंदगी मानसिक प्रपीड़ित होकर तबाह हो जाती हैं और बर्बाद हो जाती हैं।

इस संसार में प्रत्येक बिन्दु के दो पक्ष होते हैं– एक श्रेयस तथा दूसरा प्रेयस– सकारात्मक पक्ष और नकारात्मक पक्ष। हमें सर्वांगीण होकर दोनों पक्षों को देखना चाहिये, सर्वांगीण दृष्टा बनना चाहिये और दूसरों को भी सर्वांगीण दृष्टा बनाना चाहिये। चाहे वह साधारण मनुष्य हो या बुद्धिमान मनुष्य हो, सभी को सकारात्मकता से विचार करना चाहिये और तभी हम श्रेयस मार्ग की ओर अग्रसर हो सकेंगे। इस प्रकार की सकारात्मक सोंच को सभी संत–महात्माओं को रखना चाहिये। इस संसार में जो कुछ भी बना है वह ईश्वर के द्वारा रचित है तो फिर वह गलत कैसे हो सकता है!

मनुष्य में षड्–विकार होते हैं और इन विकारों का शरीर में होना भी अत्याश्यक है अन्यथा शरीर मृत हो जायेगा। यदि ये नहीं होंगे तो संसार का कोई भी कार्य नहीं हो सकेगा। इसलिये इनका होना भी अत्यावश्यक है। प्रथम हम इनका सकारात्मक पक्ष देखें जिससे मनुष्य की एवं संसार की उन्नति होती है जो सृजनात्मक है।

1. **काम** – काम से ईक्षण शक्ति, प्रजनन और जीव उद्धार।
2. **क्रोध** – क्रोध से निरन्तर क्रियाशील होना और संकल्प पूर्ण होना।
3. **लोभ** – लोभ से शारीरिक, सामाजिक उन्नति करते हुये मानवीय संवर्धन होना।
4. **मोह** – मोह से घर, परिवार और संतान का पालन–पोषण होना तथा सामाजिक उत्तरदायित्व निर्वहन होना।
5. **मद** – मद से प्रत्येक कार्य सफल होना, सुख–आनन्द प्राप्त होना और आध्यात्मिकता में निमग्न होना।
6. **मत्सर** – मत्सर से बौद्धिक स्तर की उन्नति और ईश्वरीय आदेश का पालन करते हुये संपूर्ण ब्रह्मण्ड के उद्धार के लिये तत्पर रहना।

ये षड् विकार मनुष्य की समग्रता का विकास करते हुये उन्नति की ओर ले जाते हैं। इनका संबन्ध 'मन' से है और 'मन' के वेग को ये प्रबल करते हैं चाहे वह श्रेयस की ओर जाय या प्रेयस की ओर जाय। और इन्हीं से संसार की भौतिकता का जन्म होता है। इन्हीं षड् विकारों के माध्यम से मनुष्य को श्रेयस की प्राप्ति होकर आत्मिक उन्नति करता हुआ मोक्ष गति को प्राप्त होता है क्योंकि षड्–विकार और अन्तः करण चतुष्टय मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार विज्ञानमय कोष तक पहुँचते हैं। विज्ञानमय कोष तक जाकर ये वहीं पर रुक जाते हैं और समस्त प्रकार के इनके प्रपंच विज्ञानमय कोष में ही समाप्त हो जाते हैं परन्तु 'मद' की गति आनन्दमय कोष के द्वार तक है, 'मद' ही चरम आनन्द की प्राप्ति करवाने में सहायक है। जब योगी को असंप्रज्ञात समाधि की प्राप्ति होती है और 'आत्म–तत्व' के प्रकाश के खुलते ही 'मद' समाप्त हो जाता है तब योगी को कैवल्य अवस्था की प्राप्ति होकर आत्म–तत्व प्रकाश से प्रकाशित हो जाता है।

ये षड्–विकार हमारी उन्नति में कहाँ से कहाँ तक सहायक हैं। हम सब–कुछ इनकी अच्छाइयों को भूल जाते हैं और इनकी आलोचना में ही जीवन बिता देते हैं। ये शक्कर की औषधि की तरह हैं। शक्कर स्वाद में मधुर होती है और नाना प्रकार की मिष्टान्न इसी से बनती हैं और शक्कर शारीरिक शक्ति को बढ़ाती है और ऊर्जा प्रदान करती है। और यदि शक्कर के उपयोग करने में मात्रा का ध्यान न देकर सदुपयोग न किया गया तो यही महा–भयंकर मधु–मेह रोग प्रदान कर देती है। जिस प्रकार शक्कर में गुण और अवगुण दोनों हैं। उसी प्रकार षड्–विकारों में गुण व अवगुण दोनों हैं। हम इनका सदुपयोग न करके दुरुपयोग अधिक करते हैं, हम इनकी मात्रा का ध्यान नहीं रखते हैं और इनके द्वारा उत्प्रेरित भौतिक सुखों में ही बस जाते हैं और प्रेयस मार्ग का वरण करके इसी में बने रहते हैं। इसीलिये ये मनुष्य को अवनति की ओर ले जाते हैं और सुख कम और दुःख ज्यादा मिलते हैं। तब हम आलोचना ही आलोचना में लगे रहते हैं।

भौतिक सुख और आनन्द में ही मनुष्य लिप्त होकर बसने लगता है तब इन्हीं षड्–विकारों से ही मनुष्य से कुकृत्य होना प्रारम्भ हो जाते हैं और अवनति का मार्ग खुल जाता है। और इससे इतने कुकृत्य होते हैं कि अपने साथ–साथ संपूर्ण ब्रह्माण्ड को नष्ट–भ्रष्ट करके अवनति की ओर ले जाता है और भोगने के लिये अधोगति की योनियों में चला जाता है–

1. **काम** – काम से परिग्रह, सौंदर्य साधनों की वृद्धि, विलसी वस्तुओं की वृद्धि (सेंट व मॉडर्न परिधान आदि), मांसाहार, मद्यपान, समलैंगिकता, बलात्कार, बहु–विवाह, शोषण, अतृप्ति, व्यभिचार, जीवों एवं प्रकृति पर अत्याचार एवं मानवीयता का पूर्ण रूप से हनन होना आदि.....आदि।
2. **क्रोध** – क्रोध से बुद्धि–विवेक का हनन, मूढ़ता, संकुचित मस्तिष्क, अपराधिक प्रवृत्ति, मानसिक उन्माद, प्रतिशोध, हठी, कुपथगामी, आसुरी–प्रवृत्ति, दम्भी, अहंकारी, निर्लज्जी, अन्यायी व अपने श्रेय से पतन होना आदि....आदि।
3. **लोभ** – लोभ से अत्यधिक स्वार्थी, संग्रही, घोटाले, घपले, स्तेय, मन–मर्जी, धोखा धड़ी, विश्वासघाती, कपटी, छलिया, बेईमानी, मिलावटी, विभाजक, अनैतिक, टकरारी, मानवता व वैश्विक विभाजनकारी आदि...आदि।
4. **मोह** – मोह से एकांगीपन, घमण्ड, व्यसनी, उपद्रवी, सीमित, पतन, प्रकृति–पूजक, अंध–विश्वासी, वाम–पंथी, अवसादी, उन्मत्त, लयी, व मैं और मेरा आदि....आदि।
5. **मद** – मद से मदान्धता, आवरण, अज्ञानता, सुख–साधनों में निमग्न, असत्य, अप्रिय, कटु वाचक, दलिद्र, एकाधिकारी, पक्षपाती, क्षुद्र, धोखेबाज, नास्तिक, व सामाजिक पतन होना आदि...आदि।
6. **मत्सर** – अपना मत, पंथ व सम्प्रदाय होना, ईश्वरीय आदेशों की अवहेलना, अधर्मी, आलोचक, अपनी बड़ाई, बिना किये हुये अपने नाम व ख्याति की वाञ्छा, दूसरे के अधिकार को छीनना, अवसर परस्त, चालाक, निकम्मा, दुष्प्रचारक, नीचविचारों वाला व अपने साथ–साथ संपूर्ण ब्रह्माण्ड को पतन की ओर ले चलना आदि...आदि।

चौबेपुर–कानपुर (नगर)
पिन–209203 (उ.प्र.)

सत्यार्थ प्रकाश प्रश्नावली

सत्यार्थ प्रकाश पढ़ो और निम्न प्रश्नों के उत्तर एक मास तक भेजो। सही उत्तर देने वाले को रोचक ज्ञानवर्धक पुस्तक भेजी जाएँगी।

1. भूत–प्रेत क्या होते हैं?
2. कौन–से वृक्ष का फल पीसकर जल में डालने से जल शुद्ध हो जाता है?
3. सृष्टि के आदि में किन चार ऋषियों की आत्मा में वेदों का ज्ञान दिया?
4. बीज पहले उत्पन्न हुआ या वृक्ष?
5. मुर्गी पहले हुई या अण्डा?
6. सृष्टि की आयु कितने वर्ष है?
7. प्रथम मनुष्य की उत्पत्ति कहां हुई?
8. दाढ़ी मूंछ रखनी चाहिए या नहीं?
9. अगर और तगर में, जायफल और जावित्री में क्या अन्तर है?
10. क्या ईश्वर भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों कालों को जानता है?
11. मोक्ष (मुक्ति) की अवधि कितनी होती है?

कृपया अपना नाम और पूरा पता साफ–साफ लिखें।

देवराज आर्य मित्र
WZ-428 हरीनगर
नई दिल्ली. 110064

www.thearyasamaj.org

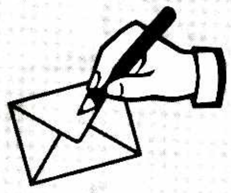

पत्र/कविता

राष्ट्रीय प्रार्थना मंत्र का जाप करना होगा

आर्य जगत जुलाई में महात्मा आनन्द स्वामी की कथा 'घोर घने जंगल में' तथा श्री हरि कृष्ण निगम जी का लेख 'पूर्वी लदाख सीमा पर चीनी आक्रमण' पढ़ कर 1962 की घटना याद आ गई, वह पाठकों को बताना चाहता हूँ। सबको स्मरण होगा कि चीन के 1962 के घुसपैठ से पहले भी देश में नारे लग रहे थे– 'चीनी हिन्दी भाई भाई'।

1962 की घुस पैठ के समय मैं और मेरा परिवार नई दिल्ली पंडारा रोड में था। महात्मा आनन्द स्वामी जी भी जब दिल्ली जाते थे तो पंडारारोड जा कर (हाण्डा परिवार के पास) रहते थे। 1962 चीन के घुसपैठ के समय स्वामी जी पंडारा रोड़ में ही थे। जब यह घुसपैठ हुई और सीमा पर हमारे जवान गाजर मूली की तरह काटे गए, क्योंकि कि उन बेचारों के पास उस सीमा पर जूते की पहनने के लिए नहीं थे।

पंडारारोड वासी बड़े चिन्तित थे, वे स्वामी जी के पास गए। स्त्रीवर्ग ने स्वामी जी को कहा हम विजय के लिए यज्ञ करना चाहते हैं। मैंने कहा हम विजय तो नहीं पा सकते क्यों न हम शान्ति यज्ञ करें। स्वामी जी ने एकदम हाँ की और कहा यज्ञ करो मैं तुम्हारे साथ हूँ। यज्ञ में आप को यजुर्वेद के 22/22 मन्त्र की विशेष आहूति देनी होगी। पांच दिन के यज्ञ की जब पूर्णाहूति हुई उसी दिन चीन अपने आप सीमा से हट गया। सायंकाल पंडारा रोड वासी आनन्द स्वामीजी के पास गए और पूछा क्या यह हमारे पांच दिन के यज्ञ का परिणाम है? स्वामी जी ने कहा यह यज्ञ का ही नतीजा है जो मन्त्र मैंने बताया था उस मन्त्र को राष्ट्रीय प्रार्थना मन्त्र कहते हैं और उस का अर्थ "हो योगक्षेमकारी स्वाधीनता हमारी" स्वामी जी ने उस मन्त्र का सबको जाप कराया– **"ओं आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो.... योगक्षेमो नः कल्पताम्!"** उस का विस्तार से अर्थ बताया।

मैं 1984 में नारो जो आस्ट्रेलिया के पास है में पार्लियामेण्टरी सलाहकार बन के गया। नारो में पिछले तीन वर्षों से वर्षा नहीं हो रही थी। मैंने वहां 50–55 भारतीय अधिकारियों के द्वारा यज्ञ कराया और इसी मन्त्र की आहूति दी, पूर्णाहूति के पश्चात् वहां नारो (Nauru) में इतनी वर्षा हुई कि तीन वर्षों की पूर्ति कर दी। वहां जब सबने कहा कि क्या इस यज्ञ (हवन) का परिणाम है? तो मैंने स्वामी जी ने जो अर्थ बताया था– इच्छानुसार बरसे पर्जन्य ताप धोवें– तो सब ने कहा धाप एक हवन महीने में एक बार कराया करें। नारो में हम यज्ञ की सामग्री तथा समिधा फिजी से मंगवाते थे। मैं चार वर्ष वहा रहा वर्षा हर वर्ष होती थी।

आज चीन तथा पाकिस्तान ने भारत को असहाय कर दिया है और देश के अन्दर आतंकवाद ने डर की स्थिति बना रखी है।

ऐसे हालात में भी देश की सरकार गहरी निंद्रा में है। इन हालात में भगवान ही देश को बचा सकते हैं। मेरा विचार है कि यजुर्वेद के 22/22 के मन्त्र का देश की हर आर्य समाज में जाप तथा यज्ञ की आहुति देनी होगी। हमें ईश्वरीय शक्ति का आहवान् करने का ही सबको परामर्श देना होगा।

डा. देवेन्द्र गठोक
ए–5/103 आक्सफोर्ड विलेज पुणे–40

****

सरस्वती-संवाद

सरस्वते देवयन्तो हवन्ते सरस्वतीमध्वरे तायमाने।
सरस्वती सुकृतो हवन्ते सरस्वती दाशषेवार्य दात्।।

अथर्व 18.1.41

सरस्वती अभिलाषा तुमसे।
संवाद करो माता हमसे।।

जो तुम ने हमको शब्द दिये।
वही हमारे ये गीत हुये।
दिव्यता देन लेकर आयी
मां सरस्वती तव शक्ति प्रिये
हो रहा तृप्त तेरे रस से।
संवाद करो माता हमसे।।

तुमने ही हमें सिखाया है।
वह हमने यज्ञ रचाया है।
जग में ध्रुव धर्म अहिंसा का,
मां सरस्वती! फैलाया है।।

सब को सहयोग मिले सब से,
संवाद करो माता हमसे।।

मख वेदी अतिशय संवेदी।
शुभ कर्मों की महिमा भेदी।
अवसाद प्रसाद सभी हरती,
मां सरस्वती सुकृत श्वेदी।
पुरुषार्थ लब्धि से नर विहँसे।
संवाद करो माता हमसे।।

जीवन में धन स्वत्व कमाया।
किया दान परमार्थ बढ़ाया।
तप–त्याग–योग – आरोग्य मोद,
मां सरस्वती ने बिखराया।
हर ओर ऐश्वर्य सुख बर से।
संवाद करो माता हम से।।

गुरु ज्ञानवती श्री वाक्वती
जग जननी सी अनुरागवती।
निजपावन मधुर लोरियों से,
मां सरस्वती यश बल भरती।
प्रभु–भग से जग–संसृति सरसे।
संवाद करो माता हमसे।।

देवनारायण भारद्वाज 'देवातिथि'
'वरेण्यम्' अवन्तिका (प्रथम)
रामघाट मार्ग अलीगढ़,
202001 (उ.प्र.)

काश समस्त गुरुकुलों के एक सूत्र में पिरोने के प्रयास होते

यह गर्व का विषय है कि श्री मद्दयानन्द कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, चोरीपुरा (अमोदा) की छात्राय धनुष विद्या (तीर अन्दाजी) में राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाये हुऐ है। चार वर्ष पूर्व इस संस्थान की चार छात्रायें ओलम्पिक खेलों में भी भाग ले चुकी है। परन्तु इनका अनुसरण अन्य गुरुकुल या डी.ए.वी. शिक्षण संस्थान क्यो नहीं कर पा रहे?

जानकर सूत्रों के अनुसार तीर अंदाजी प्रतियोगिता में ज्यादा संसाधनों की आवश्यकता नहीं होती तथा छात्रायें आसानी से इस परम्परा को अपना सकती हैं। यह खेद है कि राष्ट्रीय स्तर पर गुरुकुल आपस मे सामंजस्य नही रखते जिस कारण अनेक उपलब्धि का आदान–प्रदान नही होता।

यह सर्वविदित है कि मिशनरी शिक्षण संस्थान राष्ट्रीय स्तर पर संगठित होते हैं तथा उनका पाठ्यक्रम भी एक समान होता है

काश देश के समस्त गुरुकुलों एक सूत्र में पिरोने के प्रयास होते और आधुनिकता का परिचायक होते।

कृष्णमोहन गोयल
अमरोहा 244221

****

आर्य समाज नोएडा द्वारा उत्तराखण्ड में आई आपदा में सहभागिता

आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल, बी 69, सेक्टर-33, नोएडा में सम्पन्न हुई बैठक में उत्तराखण्ड में प्राकृतिक आपदा पर गहन संवेदना प्रकट करते हुए चिंता प्रकट की गई। हादसे के शिकार दिवंगत आत्माओं के प्रति श्रद्धांजलि समर्पित की गई। उनकी शांति एवं सद्गति के लिए शान्ति यज्ञ का आयोजन किया गया व प्रार्थना की गई यज्ञ के ब्रह्मा डॉ. जयेन्द्र आचार्य थे। आर्य समाज के सदस्यों ने आपदाग्रस्त लोगों की सहायता का संकल्प लिया व सभी से अधिक से अधिक सहयोग की अपील की। यह भी सर्वसम्मति से पारित किया गया कि आर्य समाज नोएडा उत्तराखण्ड के आपदाग्रस्त बेसहारा बच्चों को अपने आर्ष गुरुकुल नोएडा में 50 लड़के तथा सोरखा में संचालित कन्या गुरूकुल में 100 लड़कियों के रहन-सहन व शिक्षा की सम्पूर्ण जिम्मेदारी वहन करेगा।

आर्य समाज के कैप्टन अशोक गुलाटी एवं लवानिया जी ने नोएडा की सामाजिक संस्थाओं के लोकमंच सहयोग से एकत्रित सामग्री 2 ट्रकों में 401 पार्सल मयाली, जरकोली आदी गांवों के पीड़ित परिवारों को प्रदान की गई।

सितम्बर मास में ऊपरी क्षेत्रों में पुनर्वास हेतु पुनः जाने का कार्यक्रम बनाया जा रहा है।

☞ *पृष्ठ 8 का शेष*

समग्र क्रान्ति...

वर्ग विशेष को ईश्वर द्वारा दिये गये ज्ञान से वञ्चित रखें।

स्त्रियों को अधिकारः- यदि स्वामी दयानन्द न आये होते तो आज के युग में जिन उच्च पदों पर महिलायें आसीन हैं, यह अधिकार उन्हें नहीं मिलना था। स्त्रियों को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं था। यहां तक कि उन्हें गायत्री-जाप का अधिकार नहीं था। स्वामी जी ने इस अन्ध विश्वास पर कड़ी चोट की।

जड़ पूजा के विरुद्ध : महर्षि का मानना था कि मूर्ति जड़ है। मूर्ति की पूजा अर्चना से कोई लाभ नहीं अपितु बुद्धि भी जड़ हो जाती है।

राजनीति में धर्म - राजनीति यदि धर्म विहीन होगी तो अत्याचार में वृद्धि होगी। आर्य समाज के इस दृष्टिकोण की बड़ी सटीक व्याख्या अकबर इलाहाबादी का निम्न शेर में अवलोकनीय है-

जलाले पादशाही हो या जमहूरी तमाशा हो जुदा हो दीन स्यासत से तो रह जाती है चंगेजी।

महर्षि दयानन्द ने अन्धविश्वासों के गढ़ को हिला दिया।

कुम्भ के मेले में पाखण्ड खण्डिनी पताका

हरिद्वार में स्वामी जी ने पाखण्ड खण्डिनी पताका गाढ़ दी जो आज तक प्रतीक के रूप में हरिद्वार में मोहन आश्रम के अन्दर उद्घोष कर रही है कि महर्षि दयानन्द ने पाखण्डी पण्डों द्वारा ठगे जा रहे भोले भाले लोगों को बताया कि मात्र गंगा में डुबकी लगाने से पापों का नाश नहीं होता अपितु श्रेष्ठ कर्म करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है।

विधवा विवाह के पक्षधर

स्वामी जी विधवा विवाह के हामी थे। उन का कहना था कि जब पुरुष पत्नी की मृत्यु के उपरान्त पुनः विवाह कर सकता है तो स्त्री के साथ यह अन्याय क्यों कि वह पति की मृत्यु के बाद विवाह न करे। कई बाल विधवायें सिर मुण्डवा कर आजीवन श्वेत वस्त्र धारण करके जीवन व्यतीत करती हैं। यह अन्याय नहीं तो और क्या है।

बाल विवाह का निषेध :- स्वामी जी का वेद के आधार पर मानना था कि जब तक बालक 25 वर्ष का न हो जाये और कन्या 16 वर्ष की न हो जाये। आज भी कुछ प्रदेशों में बच्चों के जन्म लेते ही उन का विवाह कर देते हैं। अब तो भारत सरकार के कानून के अन्तर्गत पुरुष 21 वर्ष से पूर्व तथा बालिका 18 वर्ष की आयु से पूर्व विवाह नहीं कर सकते।

श्राद्ध व तर्पण - विडम्बना का विषय है कि जीवित माता-पिता के भोजन व औषधियों तक की जो लोग व्यवस्था नहीं करते वे मृतक श्राद्ध करते हैं। ब्राह्मणों ने अपनी रोज़ी रोटी का तरीका बना रखा है कि ब्राह्मणों को दान दक्षिणा करो तो वह उन के पितरों को पहुंच जायेगी। मृत्यु उपरान्त पितर किसी योनि में हैं इतना तक तो वे जानते नहीं, लोगों मूर्ख बनाये जा रहे हैं। स्वामी जी कहते थे यदि आप जीवित माता-पिता की सेवा करें तो वही वास्तविक श्राद्ध है।

स्वामी दयानन्द के सुधारवादी कार्य असंख्य हैं जो गिनवाये नहीं जा सकते।

पांच शत्रुओं पर विजयः- मनुष्य के सब से बड़े पांच शत्रु हैं- काम, क्रोध, लोभ, मोह व अहंकार।

काम पर विजय- सर्वविदित है कि भीष्म पितामाह के बाद वे ही अखण्ड ब्रह्मचारी थे।

क्रोध पर विजय- उनके जीवन की अनेक घटनायें हैं जिन में परिलक्षित होता है कि वे अपने शत्रु पर भी क्रोधित नहीं होते थे। दो घटनाओं का यहां उल्लेख करना चाहूंगा।

स्वामी जी की कुटिया के सामने ही एक अन्य पौराणिक सन्यासी रहते थे। वह साधु प्रतिदिन प्रातः काल स्वामी जी को प्रातः काल जी भर कर गालियाँ देते थे। एक रोज़ स्वामी जी का एक भक्त उन को भेंट करने के लिये एक टोकरा फलों का लाया। स्वामी जी ने वह टोकरा उस गाली देने वाले साधु को भिजवा दिया। साधु ने वह फलों का यह कह कर लौटा दिया कि दयानन्द को तो रोज़ मैं गाली देता हूँ। तुम गलती से यहां आए हो। दयानन्द मुझे फल नहीं भेज सकता। परन्तु स्वामी जी ने भक्त को दोबारा भेजा तथा कहला भेजा कि गालियां देने में आप की ऊर्जा कम हो जाती है। ये फल आप ही के लिए हैं। साधु बहुत शर्मिंदा हुआ तथा स्वामी जी के चरण पकड़ के क्षमा याचना करने लगा।

जब स्वामी जी पूना में प्रवास कर रहे थे, उन के शिष्यों ने आकर बताया कि कुछ लोग एक गधे पर एक व्यक्ति को बिठाकर उस के गले में "दयानन्द" की पट्टी लगा रखी है और उसका मुख काला कर रखा है। यदि आप आदेश दें तो हम उनकी मरम्मत कर दें। स्वामी जी ने बड़ी सरलता से कहा कि वह नकली दयानन्द है। उस का मुख तो काला होना ही चाहिए। शिष्यों ने पुनः कहा कि वे उस पर पत्थर फेंक रहे हैं। स्वामी जी ने कहा यही तो मैं कहता हूं कि मूर्ति पत्थर है। आज वे पत्थर फेंक रहे कल वे मूर्तियों को फेंकेंगे। शिष्यों ने फिर कहा महाराज वे कहते हैं दयानन्द शूद्र है, नीच है, स्वामी जी ने कहा मैं भी तो यही कहता हूं कि जन्म से प्रत्येक मनुष्य शूद्र है। पाठक वृन्द स्वयं निर्णय करें कि यह क्रोध पर विजय नहीं तो क्या है।

लोभ पर विजय

उदयपुर के महाराणा सज्जन सिंह ने स्वामी जी से निवेदन किया "भगवान! आप मूर्ति-पूजा का खण्डन त्याग दें तो एकलिंग महादेव के महन्त की गद्दी आप की है, उस की लाखों की आय है।"

स्वामी जी का उत्तर था "आप मुझे परमात्म देव से विमुख करना चाहते हैं। राणा जी। आप के इस छोटे से राज्य से मैं एक दौड़ लगा कर बाहर जा सकता हूँ। आप का प्रलोभन मुझे ईश्वर की आज्ञा भंग करने के लिए विवश नहीं कर सकता।

मोह से निर्लेपः एक बार जो सच्चे ईश की खोज की मन में ठानी तो घर बार, माता पिता, धन दौलत रिश्ते नाते सबका मोह त्याग कर जो घर से निकले तो पुनः उस ओर मुख नहीं मोड़ा। यहां तक कि गुरु विरजानन्द से दीक्षान्त उपरान्त वे गुरु के पास भी नहीं लौटे।

निर्भिमानी :- स्वामी जी के असंख्य शिष्य थे जिन में राजा-महाराजा, राणा-महाराणा, राज्य के उच्चाधिकारी, धनी-सेठ, परन्तु स्वामी जी को अहंकार छू तक नहीं गया था। उन का रहन सहन, तथा खान पान अति साधारण था।

उपसंहार :- स्वामी जी का चरित्र गुणों की खान है। इस विशाल समुद्र से मैंने कुछ बूंदे लेने का प्रयास किया है। आशा है पाठक वृन्द इस का रक्षा वन्दन करेंगे। तथा स्वामी द्वारा निर्देशित मार्ग पर चलकर जीवन सफल करेंगे।

स्वामी दयानन्द के जीवन की महत्त्वपूर्ण तिथियां

जन्म 12 फरवरी 1824

शिवरात्रि का उपवास सन् 1837

गृह त्याग सन् 1846

स्वतन्त्रता संग्राम में प्रथम उद्बोधन 1855

गुरु विरजानन्द की कुटिया पर विद्याध्ययन हेतु 1860

अजमेर में पादरियों से शास्त्रार्थ 1866

कर्णावास में राव कर्ण सिंह की तलवार के दो टुकड़े 1868

केशवचन्द्र सेन से कलकत्ता में भेंट 1873

बरेली में नास्तिक मुन्शी राम को उपदेश 1879

उदयपुर के महाराणा सज्जन सिंह द्वारा एकलिंग की महंती का प्रस्ताव 1882

जोधपुर के महाराणा यशवन्त सिंह को वेश्यागमन पर फटकार 1883

देहावसान 30 अक्टूबर 1883

www.thearyasamaj.org

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11/6066/2012-14
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103/2012-14
POSTED AT N.D.P.S.O. ON 28-29 /08/2013
रजिस्ट्रेशन नं. आर0 एन0 आई0 39/57

डी.ए.वी. हजारीबाग ने 15 दिनों तक वृक्षारोपण करने का लिया संकल्प

विगत पाँच बर्षो से डी.ए.वी. हजारीबाग एवं पूर्वी वन प्रमंडल के संयुक्त तत्त्वावधान में वृक्षारोपण का कार्यक्रम चलाया जाता है प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी 5 हजार पौधों का वितरण छात्रों के बीच किया गया। इस वर्ष 64 वें महोत्सव का विद्यालय परिसर में पौधारोपण कर शुभारंभ किया गया। मुख्य अतिथि डा. ए.के. मल्होत्रा ने कहा कि हवा और पानी पर हमारा जीवन टिका हुआ है। ये दोनों चीजें प्रकृति से मिलती हैं। वनों के कटने से दोनों कम पड़ जाएंगे और हमारा जीवन खतरे में पड़ जाएगा। हमें अपनी सुविधाओं को सीमित कर हर हाल में प्रकृति को बचाना चाहिए। डा.डी.के. श्रीवास्तव ने कहा कि उत्तराखण्ड में हुई आपदा मानव जाति के लिए चेतावनी है। प्राचार्य अशोक कुमार ने आगतुक अतिथियों का आभार प्रकट करते हुए कहा कि छात्र–छात्राओं के माध्यम से विद्यालय को हमेशा हरा–भरा बनाने का प्रयास किया जाता है। पर्यावरण के महत्व पर बच्चों को संदेश दिया गया कि मनुष्य को जिन्दा रहना है तो पेड़ों को जिन्दा रखना होगा। छात्र–छात्राओं ने लगातार 15 दिनों तक वृक्षारोपण करने का भी संकल्प लिया। पर्यावरण से सबंधित नृत्य–गीत और एकांकी की प्रस्तुति हुई जिसमे उत्तराखण्ड की विभीषिका के मार्मिक दृश्य उपस्थित किए गए।

डी.ए.वी. तिगाँव ने मनाया स्वतन्त्रता दिवस

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, तिगाँव में स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष्य में विभिन्न साँस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर छात्र–छात्राओं ने देशभक्ति से ओतप्रोत समूह गान प्रस्तुत कर समा बाध दिया। विद्यालय के नन्हे मुन्ने छात्रों ने फैन्सी ड्रैन्सी ड्रैस प्रतियोगिता में भाग लेकर आये हुए अतिथियों को रानी लक्ष्मीबाई, लाला लाजपत राय, शहीद भगत सिंह, जवाहर लाल नेहरू, महात्मा गांधी आदि की कुर्बानियां याद कराकर सबकी आंखें नम कर दीं। वरिष्ठ वर्ग की छात्राओं ने पंजाबी व राजस्थानी नृत्य से सब को झूमने पर मजबूर कर दिया।

छात्राओं ने भव्य शारीरिक क्रियाएँ, लाठी चलाना, डम बैल आदि का प्रर्दशन किया। तिरंगों, सुन्दर रंगोलियों और रंगारग सांस्कृतिक प्रर्दशन ने आये हुए अभिभावकों व अतिथियों का मन मोह लिया। विद्यालय की प्रधानाचार्या ने इस अवसर पर तिरंगा फहरा कर सभी छात्र छात्राओं व अभिभावकों को 67वें स्वतन्त्रता दिवस की बधाई दी। इस अवसर पर तिगाव के सरपंच व बैंक ऑफ इण्डिया के मैनेजर को मुख्य रूप से आमंत्रित किया गया था। विद्यालय के मैनेजर डा. सतीश आहुजा विद्यालय के छात्रों, स्टाफ व क्षेत्रवासियों को अपनी शुभकामनाएँ दीं।

'अद्यतन हिन्दी-कविताः नये संदर्भ' का हुआ लोकार्पण

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा (पश्चिमी दिल्ली) की ओर से आर्य समाज, जनकपुरी के विशाल सभागार में लोकार्पण, संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह का भव्य आयोजन किया गया। समारोह के दौरान मूर्धन्य समालोचक एवं भावनगर विश्वविद्यालय, भावनगर, गुजरात के हिन्दी–विभाग के पूर्व प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया की हाल ही में प्रकाशित पुस्तक **'अद्यतन हिन्दी–कविताः नये संदर्भ'** का लोकार्पण भी किया गया। महाकवि 'निराला' के बाद की हिन्दी–कविता के नवीनप्रयोगों, अभिव्यक्तिकौशल, विसंगत परिवेश, युगीन आतंक–संत्रास–अपराध की प्रवृत्ति, राजनीतिक छल–छद्म, बढ़ती महंगाई, आम आदमी की दुर्दशा, विम्ब–प्रतीक–मिथक और बहु–आयामी काव्य–भाषा का विवेचन करने वाली इस पुस्तक का लोकार्पण आस्ट्रेलिया से आये वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. देवराज पथिक, साउथ–वैस्ट जिला उपनिदेशक शिक्षा श्री जंग बहादुर एवं वैदिक विद्वान् आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री ने संयुक्त रूप से किया। विमोचन करते हुए डॉ. पथिक ने कहा कि काव्यालोचक प्रो. कथूरिया ने इस ग्रंथ में समय की करवटों के साथ बदलती काव्य–चेतना और अद्यतन हिन्दी–कविता के नये संदर्भों की अच्छी पहचान और परख की है। निः संदेह यह कृति समकालीन हिन्दी काव्य–समीक्षा के क्षेत्र में एक बड़े अभाव की पूर्ति करती है।

'भारतीय संस्कृति के प्रचार–प्रसार में सोशल मीडिया की भूमिका' पर बोलते हुए विद्वानों ने इसका विवेकपूर्वक प्रयोग करने पर बल दिया। भारतीय संस्कृति ज्ञान–परीक्षा में 80 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्रों एवं उनके मार्गदर्शक अध्यापकों को भी सम्मानित किया गया। समारोह मे बहुत बड़ी संख्या, अध्यापक, छात्र, साहित्यकार एवं पत्रकार उपस्थित थे। सेयोजक श्री के.एल. सचदेवा ने सभी का धन्यवाद किया।

मुद्रक व प्रकाशक – **श्री प्रबोध महाजन**, सभा मंत्री द्वारा **मदन गोयल** के प्रबंध में **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.**, डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 से प्रकाशित। स्वामित्व – आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 (दूरभाष : 23362110, 23360059) सम्पादक – **श्री पूनम सूरी**